सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्ष: 12 ● अंक 96 पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, मंगलवार 12 मई, 2026
मूल्य ₹ 3/-

जैसे मोमबत्ती बिना आग के नहीं जल सकती, मनुष्य भी आध्यात्मिक जीवन के बिना नहीं जी सकता।

-गौतम बुद्ध

प्लेऑफ में अभी तक नहीं पहुंची एक... 7
भारत में नहीं बची कोई कम्युनिस्ट... 3
भाजपा सरकार के हाथ से लगाम... 2

कुर्सी का कुरुक्षेत्र

केरल में क्यों नहीं बन पा रही कांग्रेसी सरकार?

» आठ दिन 102 सीटें फिर भी मुख्यमंत्री नहीं!

» आखिर कांग्रेस के भीतर चल क्या रहा है?

» बीजेपी भी इंतजार में केरल में खुल सकता है क्या नया दरवाज़ा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। देश के पांच राज्यों में हुए चुनाव में चार राज्यों में सरकारे बन चुकी है और काम-काज भी शुरू हो चुका है। लेकिन दक्षिण के खूबसूरत राज्यों में से एक केरल में स्पष्ट बहुमत के बाद भी सरकार नहीं बन पा रही है। यहां कांग्रेस लीड यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट यानी यूडीएफ ने बाजी मारी है।

यूडीएफ ने 140 सदस्यीय विधानसभा में 102 सीटें जीतकर शानदार वापसी की। कांग्रेस का कहना है कि वह लोकतांत्रिक परम्पराओं वाली पार्टी है लिहाजा सभी को अपने दावे पेश करने का अधिकार है और उन दावों के बीच से किसी सही उम्मीदवार का नाम चुना जाता है। बस दिक्कत यहीं से जन्म ले रही है और कांग्रेस के लोकतांत्रिक मूल्यों से फायदा उठाने के लिए बीजेपी ने अपने सिग्नल आन कर दिये हैं। लेफ्ट पार्टियां भी आंख मूंद कर नहीं बैठी है और फायदे की चाल चलने की फिराक में हैं।

कार्यकर्ताओं की पहली पसंद वी डी सतीशन

जमीन पर कांग्रेस कार्यकर्ताओं और समर्थकों का एक बड़ा वर्ग वी डी सतीशन को मुख्यमंत्री के रूप में देखना चाहता है। इसकी वजह केवल राजनीति नहीं बल्कि भावनात्मक जुड़ाव भी है। पिछले पांच वर्षों में जब कांग्रेस विपक्ष में थी तब सतीशन ने सड़क से लेकर विधानसभा तक वामपंथी सरकार के खिलाफ सबसे आक्रामक भूमिका निभाई। उन्होंने भ्रष्टाचार, प्रशासनिक विफलताओं और कानून-व्यवस्था जैसे मुद्दों पर लगातार पिनराई विजयन सरकार को घेरा। यही कारण है कि कांग्रेस का जमीनी कार्यकर्ता उन्हें संघर्ष का चेहरा मानता है। पार्टी के भीतर यह भावना भी मजबूत है कि जिसने विपक्ष में रहकर लड़ाई लड़ी जनता के बीच पार्टी को जिंदा रखा और संगठन को ऊर्जा दी सत्ता मिलने पर पहला अधिकार उसी का होना चाहिए।

यहीं से हाईकमान की असली दुविधा शुरू होती है

अगर कांग्रेस केवल केंद्रीय नेतृत्व के भरोसे को प्राथमिकता देती है और कार्यकर्ताओं की भावना को नजरअंदाज करती है तो इसका संदेश गलत जा सकता है। दूसरी तरफ अगर केवल भावनात्मक दबाव में फैसला लिया गया तो दिल्ली और राज्य नेतृत्व के बीच समन्वय प्रभावित हो सकता है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह फैसला केवल एक मुख्यमंत्री का चयन नहीं होगा बल्कि यह तय करेगा कि राहुल गांधी की कांग्रेस भविष्य में किस तरह की राजनीति करना चाहती है हाईकमान केंद्रित राजनीति या जमीनी नेतृत्व आधारित राजनीति। यही वजह है कि दिल्ली में बैठकों का दौर लगातार जारी है। क्योंकि कांग्रेस समझती है कि केरल की यह जीत सिर्फ सरकार बनाने का मौका नहीं बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर अपने राजनीतिक मॉडल को साबित करने की भी परीक्षा है।

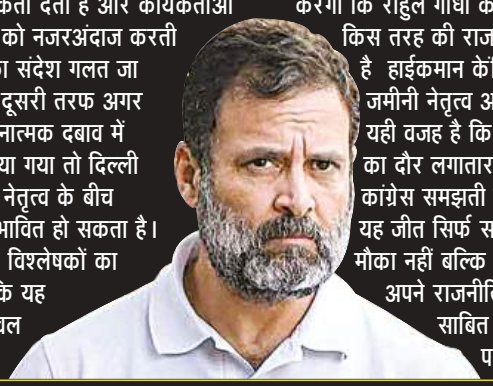

बेहतरीन संगठनकर्ता हैं केसी वेणूगोपाल

इंडियन नेशनल कांग्रेस के भीतर इस समय सबसे बड़ा और सबसे संवेदनशील सवाल सिर्फ इतना नहीं है कि केरल का अगला मुख्यमंत्री कौन बनेगा। असली सवाल यह है कि पार्टी आखिर किस रास्ते पर आगे बढ़ना चाहती है। दिल्ली के रणनीतिक भरोसे वाले नेतृत्व के साथ या जमीन पर संघर्ष करके उभरे जनाधार वाले चेहरे के साथ? यही वजह है कि मुख्यमंत्री चयन का मामला अब केवल एक प्रशासनिक फैसला नहीं रह गया बल्कि कांग्रेस की आंतरिक राजनीति, नेतृत्व शैली और भविष्य की दिशा का बड़ा परीक्षण बन चुका है। मुख्यमंत्री पद की दौड़ में सबसे आगे जिस नाम की चर्चा हो रही है वह है केसी वेणूगोपाल संगठन के भीतर उनकी पकड़ बेहद मजबूत मानी जाती है। वह लंबे समय से कांग्रेस लाईकमान खासकर राहुल गांधी के सबसे भरोसेमंद नेताओं में गिने जाते हैं। दिल्ली की राजनीति में उनकी स्वीकार्यता, संगठनात्मक क्षमता और केंद्रीय नेतृत्व के साथ तालमेल उन्हें एक मजबूत दावेदार बनाता है। वहीं कांग्रेस के भीतर एक बड़ा वर्ग मानता है कि केरल जैसे राजनीतिक रूप से संवेदनशील राज्य में ऐसा चेहरा होना चाहिए जो न केवल प्रशासन संभाल सके बल्कि दिल्ली और राज्य संगठन के बीच मजबूत संतुलन भी बनाए रखे। वेणुगोपाल को इसी दृष्टि से देखा जा रहा है। लेकिन जैसे-जैसे उनका नाम आगे बढ़ रहा है वैसे-वैसे पार्टी के भीतर दूसरी तरह की बेचैनी भी दिखाई देने लगी है।

कांग्रेस में बेचैनी

जिस जीत के बाद कांग्रेस खेमे में जश्न होना चाहिए था वहां अब बेचैनी लॉबिंग और गुटबाजी की खबरें ज्यादा सुनाई दे रही है। आठ दिन बीत चुके हैं लेकिन मुख्यमंत्री का चेहरा तय नहीं हो पाया। राजनीतिक गलियारों में चर्चा है कि कांग्रेस के भीतर अब तीन बड़े शक्ति केंद्र बन चुके हैं। पहला गुट एआईसीसी महासचिव केसी वेणूगोपाल के के समर्थन में है। दूसरा गुट वी डी सतीशन को मुख्यमंत्री बनाना चाहता है। जबकि तीसरा धड़ा वरिष्ठ नेता रमेश चैन्नीथाला को सबसे अनुभवी विकल्प बता रहा है। बताया जा रहा है कि हर गुट अपने-अपने विधायकों की संख्या दिखाकर हाईकमान पर दबाव बना रहा है। कोई 20 विधायकों का समर्थन होने का दावा कर रहा है तो कोई 40 विधायकों के साथ अपनी ताकत दिखा रहा है।

केरल में राजनीतिक जमीन की तलाश में बीजेपी

बीजेपी भले अभी केरल की सत्ता की तस्वीर में सीधे दिखाई न दे रही हो लेकिन कांग्रेस के भीतर चल रहा सत्ता संघर्ष बीजेपी के लिए किसी राजनीतिक अवसर से कम नहीं माना जा रहा। यही वजह है कि दिल्ली से लेकर तिरुवनंतपुरम तक राजनीतिक गलियारों में एक सवाल तेजी से घूम रहा है कि क्या कांग्रेस की अंदरूनी लड़ाई आखिरकार केरल में बीजेपी के लिए वह जगह बना सकती है जिसकी तलाश पार्टी वर्षों से कर रही है? अब तक केरल की राजनीति दो ध्रुवों के बीच सिमटी रही है एक तरफ कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया मार्क्सिस्ट नेतृत्व वाला एलडीएफ और दूसरी तरफ कांग्रेस नेतृत्व वाला यूडीएफ। बीजेपी लगातार कोशिशों के बावजूद राज्य में निर्णायक राजनीतिक ताकत नहीं बन पाई। लेकिन इस बार हालात अलग माने जा रहे हैं। कारण साफ है कि कांग्रेस की जीत जितनी बड़ी है उसके भीतर की खींचतान उससे भी ज्यादा बड़ी दिखाई देने लगी है। मुख्यमंत्री पद को लेकर जिस तरह अलग-अलग गुट सक्रिय हैं उसने पार्टी के भीतर असहजता बढ़ा दी है। कोई गुट केसी वेणुगोपाल के पक्ष में

लामबंद है तो कोई वीडी सतीशन को जनता का चेहरा बताकर दबाव बना रहा है। वहीं रमेश चेन्निथला समर्थक भी अपने समीकरण मजबूत करने में जुटे हैं। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि अगर यह संघर्ष लंबा खिंचता है और किसी बड़े नेता या विधायक समूह में नाराजगी खुलकर सामने आती है तो बीजेपी तुरंत उस राजनीतिक खाली जगह को भरने की कोशिश करेगी। सूत्रों की मानें तो बीजेपी फिलहाल सार्वजनिक तौर पर चुप्पी बनाए हुए है लेकिन पार्टी का केंद्रीय नेतृत्व और संगठन पूरे घटनाक्रम पर बेहद करीब से नजर रखे हुए हैं। क्योंकि राजनीति में सबसे बड़ा अवसर वही होता है जब विरोधी दल अपनी ही लड़ाई में कमजोर पड़ जाए। सबसे बड़ा डर कांग्रेस के भीतर भी यही माना जा रहा है कि अगर मुख्यमंत्री चयन में असंतोष बढ़ा तो कुछ विधायक क्रॉस पॉलिटिकल अंडरस्टैंडिंग की तरफ बढ़ सकते हैं। यही वह स्थिति होगी जहां बीजेपी अपने लिए नया राजनीतिक दरवाज़ा खोलने की कोशिश करेगी। केरल में अभी सत्ता कांग्रेस के हाथ में दिखाई दे रही है लेकिन अगर अंदरूनी युद्ध और लंबा चला तो आने वाले दिनों में असली फायदा उस पार्टी को मिल सकता है जो फिलहाल सबसे शांत बैठी है।

भाजपा सरकार के हाथ से लगाम पूरी तरह छूट गई : अखिलेश यादव

सोना न खरीदने की पीएम की अपील पर भड़के सपा प्रमुख, बोले- भाजपा के लोग कर रहे हैं जमाखोरी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने पीएम के उस बयान पर भड़क गए हैं जिसमें उन्होंने देश के लोगों से एक साल तक सोना न खरीदने की अपील की थी। सपा अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा को चुनाव खत्म होते ही संकट याद आ गया।

दरअसल देश के लिए संकट सिर्फ एक है और उसका नाम है भाजपा। इतनी सारी पाबंदियां लगानी पड़ेंगी तो पांच खरब डॉलर की जुमलाई अर्थव्यवस्था कैसे बनेगी। लगता है भाजपा सरकार के हाथ से लगाम पूरी तरह छूट गई है। डॉलर आसमान छू रहा है और देश का रुपया पाताल की ओर जा रहा है। अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा ने चुनावी घपलों से राजनीति को प्रदूषित कर दिया है। नफरत फैलाकर समाज के सौहार्द को बर्बाद कर दिया है।

अखिलेश यादव ने जारी बयान में

कहा कि सोना न खरीदने की अपील जनता से नहीं, भाजपाइयों को अपने भ्रष्ट लोगों से करनी चाहिए, क्योंकि जनता तो वैसे भी 1.5 लाख तोले का सोना नहीं खरीद पा रही है। भाजपा के नेता ही अपनी काली कमाई को सोने में बदलने में लगे हैं। लखनऊ से लेकर गोरखपुर तक और अहमदाबाद से लेकर गुहाटी तक यही स्थिति है।

भगवान परशुराम आदर्श, सत्य, न्याय और समाजसेवा की प्रेरणा देते हैं : माता प्रसाद

लखनऊ। उत्तर प्रदेश विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष माता प्रसाद पांडेय ने सेक्टर 7, वसुंधरा, साहिबाबाद, गाजियाबाद में आयोजित भगवान परशुराम जन्मोत्सव समारोह में अतिथि के रूप में विशाल जनसभा को संबोधित किया। नेता प्रतिपक्ष ने अपने संबोधन में समाज में प्रेम, भाईचारा, सामाजिक समरसता एवं आपसी सम्मान को मजबूत बनाने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि भगवान परशुराम जी के आदर्श सत्य, न्याय और समाजसेवा की प्रेरणा देते हैं। इस अवसर पर सांसद बलिया सनातन पांडेय एवं पीतांबर शर्मा की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का सफल आयोजन पंडित अमरपाल शर्मा, श्रीमती मोहिनी शर्मा एवं आयोजन समिति ने किया।

देश में गहराएगा आर्थिक संकट, गरीबों को राहत दे सरकार : मायावती

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सोने की खरीद टालें, पेट्रोलियम पदार्थ कम उपयोग करें, पीएम नरेंद्र मोदी की इस अपील पर बसपा सुप्रीमो मायावती ने उन पर निशाना साधा है। उन्होंने एक्स पर जारी बयान में कहा कि अमेरिका और इस्राइल द्वारा ईरान के विरुद्ध जारी युद्ध समाप्ति की अनिश्चितता के कारण ऊर्जा संकट व विदेशी मुद्रा भंडार की चिंताओं को देखते हुए प्रधानमंत्री ने देश के लोगों से संयम बरतने की अपील की है।

» बसपा प्रमुख ने पीएम मोदी की अपील पर साधा निशाना

उन्होंने कहा कि इससे यह साबित होता है कि भारत के सामने संकट केवल पेट्रोल-डीजल, रसोई गैस समेत सिर्फ पेट्रोलियम पदार्थों का ही नहीं, बल्कि आर्थिक संकट भी गहराएगा। इससे करोड़ों देशवासियों का जीवन प्रभावित हो रहा है। इसके अभी जारी रहने की भी आशंका है। बसपा सुप्रीमो ने कहा कि ऐसे समय में जब देश की लगभग 10 करोड़ जनता कोरोना काल के बाद जबरदस्त रोजी-रोटी के संकट की मार झेल रही है। उसके पास संयमित होने व खोने को कुछ खास नहीं बचा है। ऐसी स्थिति में केंद्र एवं राज्य सरकारें गरीब व मेहनतकश परिवारों को राहत देकर उनका सहारा बनें। यही जन व देशहित में उचित होगा।

जनता तेल-गैस कम इस्तेमाल करे, लेकिन भाजपाई रोड शो में तेल की कोई कमी नहीं : संजय सिंह

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। आम आदमी पार्टी के यूपी प्रभारी एवं राज्यसभा सांसद संजय सिंह ने सोमवार को एक्स पर कहा कि पांच राज्यों के चुनाव खत्म होते ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनकी सरकार ने जनता का बोझ उठाने से हाथ खड़े कर दिए हैं।

संजय सिंह ने कहा कि चुनाव तक सरकार जनता को भरोसा दिलाती रही कि देश में किसी चीज की कोई कमी नहीं है, लेकिन चुनाव समाप्त होते ही जनता को तेल, गैस और सोने का इस्तेमाल कम करने की सलाह दी जाने लगी। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा सरकार महंगाई, बेरोजगारी और आर्थिक संकट को भी देशभक्ति से जोड़कर जनता को मानसिक रूप से दबाव में रखने का काम कर रही है, जबकि सत्ता के शीर्ष पर बैठे लोग

आखिर देश की जनता को कब होश आएगा

आप सांसद संजय सिंह ने सवाल उठाया कि आखिर देश की जनता को कब होश आएगा और कब लोग इन मुद्दों पर सरकार से जवाब मांगेंगे। उन्होंने कहा कि चुनाव के दौरान जनता का केवल इस्तेमाल किया जाता है। कभी चुनाव के समय लोगों के खातों में कुछ पैसे डाल दिए जाते हैं, लेकिन चुनाव खत्म होते ही युवाओं को सड़कों पर डंडों से पीटा जाता है। उन्होंने पटना की घटना का उल्लेख करते हुए कहा कि नौजवान रोजगार और अधिकार मांगते हैं तो उन्हें लाठियों से जवाब दिया जाता है।

खुद ऐशोआराम, विदेशी यात्राओं और भव्य आयोजनों में किसी प्रकार की कटौती नहीं कर रहे हैं।संजय सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वयं यह कहा कि पिछले दो महीने से सरकार जनता का बोझ उठा रही थी। उन्होंने कहा कि इसका सीधा अर्थ यह है कि जब तक पांच राज्यों के चुनाव चल रहे थे, तब तक सरकार जनता को राहत देने का दिखावा करती रही, लेकिन चुनाव खत्म होते ही अब सरकार कह रही है कि वह जनता का बोझ नहीं उठा सकती। संजय सिंह ने कहा कि भाजपा सरकार जनता को यह समझाने की कोशिश कर रही है कि महंगाई में जीना ही देशभक्ति है, गैस कम इस्तेमाल करना देशभक्ति है, सोना न खरीदना देशभक्ति है और विदेश यात्रा न करना भी देशभक्ति है। उन्होंने कहा कि हर प्रकार की तकलीफ और आर्थिक परेशानी को राष्ट्रभक्ति से जोड़कर जनता को मानसिक रूप से दोषी महसूस कराया जा रहा है। दूसरी तरफ भाजपा की विशाल रैलियां, रोड शो और राजनीतिक कार्यक्रम लगातार जारी रहते हैं, जिनमें हजारों-लाखों लोगों को बसों में भर-भरकर लाया जाता है और वहां पेट्रोल-डीजल की कोई बचत नहीं की जाती।

सीएम मान के भाई भाजपा में शामिल

» नगर निकाय चुनावों से पहले आप को झटका

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान के चचेरे भाई और पूर्व रणनीतिकार ज्ञान सिंह भाजपा में शामिल हो गए हैं, जिसे आगामी नगर निकाय चुनावों से पहले आम आदमी पार्टी के लिए एक बड़ा रणनीतिक झटका माना जा रहा है। उनका यह कदम पंजाब की राजनीति में एक महत्वपूर्ण फेरबदल का संकेत है, क्योंकि वे पहले भी मान सरकार की नीतियों के मुखर आलोचक रहे हैं।

राघव चड्ढा और आम आदमी पार्टी के छह अन्य सांसदों के बाद, पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान के चचेरे भाई ज्ञान सिंह सोमवार को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) में शामिल हो गए हैं। पंजाब भाजपा के अध्यक्ष सुनील जाखड़ और हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी चंडीगढ़ में आयोजित इस समारोह में उपस्थित थे। ज्ञान सिंह का भाजपा में शामिल होना रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण माना जा रहा है, क्योंकि वे लोकसभा और विधानसभा चुनावों में आम आदमी पार्टी के प्रमुख अभियान रणनीतिकार रहे हैं। आगामी

नगर निकाय चुनावों से ठीक पहले, एक महत्वपूर्ण समय पर पार्टी में शामिल होने का उनका निर्णय पंजाब में सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी के लिए एक बड़ा झटका माना जा रहा है। मुख्यमंत्री भगवंत मान के भाई होने के बावजूद, ज्ञान सिंह ने पहले भी राज्य प्रशासन की आलोचना की है, विशेष रूप से पंजाब में आई बाढ़ से निपटने के तरीके की, और दावा किया है कि प्रशासनिक विफलताओं ने जनता की पीड़ा को और बढ़ा दिया। एक कार्यकर्ता और पूर्व आम आदमी पार्टी रणनीतिकार के रूप में, उन्होंने अक्सर सोशल मीडिया और सार्वजनिक मंचों का उपयोग करके सरकार की महत्वपूर्ण नीतियों पर सवाल उठाए हैं, और अक्सर ऐसे रुख अपनाए हैं जो पार्टी के आधिकारिक रुख के विपरीत थे।

बामुलाहिजा

कार्टून: हसन जैदी

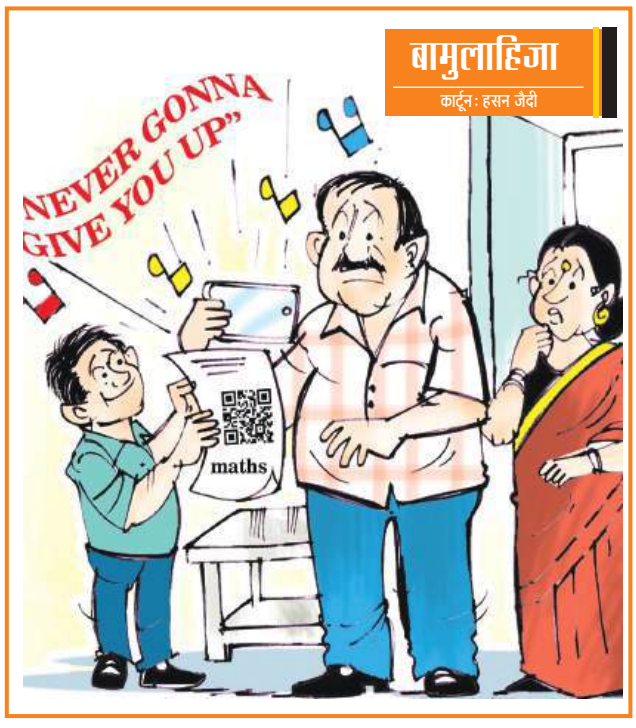

सीएम विजय ने की डीएमके प्रमुख स्टालिन से मुलाकात

» राज्य विस के सभी विधायकों ने सदन के सदस्य के रूप में शपथ ली

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चेन्नई। तमिलनाडु में तमिलगा वेट्री कज़गम (टीवीके) सरकार के गठन के बाद मुख्यमंत्री के रूप में शपथ लेने के बाद विजय की डीएमके के वरिष्ठ नेताओं से यह पहली मुलाकात थी। यह मुलाकात तमिलनाडु में नवगठित टीवीके के नेतृत्व वाली सरकार के शपथ ग्रहण समारोह के एक दिन बाद हुई। इस बीच, तमिलगा वेट्री कज़गम के नेतृत्व वाली तमिलनाडु सरकार के शपथ ग्रहण समारोह में सोमवार को राज्य विधानसभा के सभी विधायकों ने सदन के सदस्य के रूप में शपथ ली।

तमिलनाडु के मुख्यमंत्री विजय ने चेन्नई स्थित पूर्व मुख्यमंत्री और द्रविड़ मुन्नेत्र कज़गम (डीएमके) अध्यक्ष एम.के. स्टालिन के आवास पर उनसे मुलाकात की। इस मुलाकात के दौरान विजय ने पूर्व उपमुख्यमंत्री उदयनिधि स्टालिन से भी मुलाकात की। तमिलनाडु में तमिलगा वेट्री कज़गम (टीवीके) सरकार के गठन के बाद मुख्यमंत्री के रूप में शपथ

लेने के बाद विजय की डीएमके के वरिष्ठ नेताओं से यह पहली मुलाकात थी। यह मुलाकात तमिलनाडु में नवगठित टीवीके के नेतृत्व वाली सरकार के शपथ ग्रहण समारोह के एक दिन बाद हुई। इस बीच, तमिलगा वेट्री कज़गम के नेतृत्व वाली तमिलनाडु सरकार के शपथ ग्रहण समारोह में राज्य विधानसभा के सभी विधायकों ने सदन के सदस्य के रूप में शपथ ली। शपथ लेने वालों में एडप्पाडी के पलानीस्वामी, ओ. पन्नीरसेल्वम और उदयनिधि स्टालिन जैसे प्रमुख नेता, साथ ही तमिलनाडु के मंत्री एन. आनंद, आदव अर्जुन, के.जी. अरुणराज और के.ए. सेंगोत्तैयान शामिल थे। तमिलनाडु के पूर्व उपमुख्यमंत्री उदयनिधि स्टालिन ने सोमवार को नवगठित तमिलनाडु विधानसभा में विपक्ष के नेता के रूप में शपथ ली। राज्य में सी. जोसेफ विजय के नेतृत्व वाली तमिलगा वेट्री कज़गम (टीवीके) सरकार के गठन के बाद सदन के सदस्यों ने शपथ ग्रहण किया। कार्यवाही शुरू होने से पहले, उदयनिधि स्टालिन विधानसभा में प्रवेश कर विपक्ष के नेता के लिए निर्धारित अपनी सीट पर बैठ गए।

मुख्यमंत्री विजय बाद में सदन में आए और शपथ ग्रहण समारोह से पहले उदयनिधि का अभिवादन किया। कार्यक्रम की शुरुआत कार्यवाहक अध्यक्ष एम.वी. करुपैया द्वारा 17वीं तमिलनाडु विधानसभा के पहले सत्र में सभी सदस्यों का स्वागत करने के साथ हुई। तमिल में सदन को संबोधित करते हुए, करुपैया ने मुख्यमंत्री विजय को चुनाव लड़ने का अवसर देने के लिए धन्यवाद दिया और अपने निर्वाचन क्षेत्र के लोगों को विधायक चुनने के लिए आभार व्यक्त किया। उन्होंने मुख्यमंत्री को कार्यवाहक अध्यक्ष नियुक्त करने के लिए भी धन्यवाद दिया।

भारत में नहीं बची कोई कम्युनिस्ट सरकार

» नए लीडर की पार्टी को दरकार
» इतिहास में दर्ज हुआ 4 मई का दिन
» भाजपा ने राज्य शहर राज्य उसको पहुंचाया नुकसान

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। कभी वैचारिक, राजनैतिक आंदोलनों से देश को दिशा दिखाने वाली कम्युनिस्ट पार्टी देश में कमजोर हो रही है। जहां देश किसी न किसी राज्य में उसकी सरकार रहती थी। 4 मई का दिन इतिहास में दर्ज हो गया है। 1970 के दशक के बाद पहली बार भारत में कोई कम्युनिस्ट मुख्यमंत्री नहीं होगा। केरल में उनका आखिरी किला भी ढह गया है। पिनाराई विजयन के नेतृत्व वाली लेफ्ट डेमोक्रेटिक फ्रंट सरकार 16 में सत्ता में आई थी। केरल में सीपीआई(एम) के नेतृत्व वाली वामपंथी सरकार को करारी हार का सामना करना पड़ है।

ऐसे में वह लाल रंग जो कभी भारत के राजनीतिक नक्शे पर हावी था, अब बस टुकड़ों में ही बचा है। वामपंथी पार्टियां भले ही अपनी संगठनात्मक मौजूदगी बनाए हुए हैं। लेकिन, राष्ट्रीय स्तर पर उनका प्रभाव लगातार कम होता जा रहा है। इन पार्टियों में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीआई), भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) यानी सीपीआई(एम) और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी-लेनिनवादी) लिबरेशन यानी सीपीआई (एमएल) लिबरेशन शामिल हैं। हालांकि अब चूकि अन्य सियासी दलों ने उसका स्थान ले लिया है। इसमें कोई दो राय नहीं की कम्युनिस्ट पाटियों लोगों में राजनैतिक चेतना का उभार किया सत्ता से सवाल पूछना सिखाया और अपने हक के लिए लड़ने की ताकत आम आदमी के अंदर लाया। पर धीरे-धीरे बदलती राजनीति और समाज के साथ वह कदम से कदम नहीं मिला सकी और उसकी संख्या कम होती चली गई।

केरल में हार के साथ ढहा आखिरी किला

भारत में लेफ्ट का राजनीतिक इतिहास काफी गौरवशाली

भारत में लेफ्ट का राजनीतिक इतिहास काफी गौरवशाली रहा है। जब 1951-52 में देश में पहली बार चुनाव हुए थे, तब लोकसभा में विपक्षी पार्टियों में सबसे ज्यादा सीटें कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया के पास ही थीं। ठीक पांच साल बाद 1957 में भारत की लेफ्ट पार्टियों ने केरल में चुनाव जीतकर इतिहास रच दिया। किसी भी बड़े देश में दुनिया की पहली लोकतांत्रिक रूप से चुनी हुई कम्युनिस्ट सरकार बनाई। केरल में लेफ्ट की सत्ता आती-जाती रही। लेकिन, एक और राज्य जहां उसे लंबे समय तक लगातार सफलता मिली, वह त्रिपुरा था। यह 2018 में बीजेपी के हाथों चला गया।

त्रिपुरा में बीजेपी ने खत्म किया राज

वामपंथी पार्टियों का त्रिपुरा में 1993 से 2018 तक शासन रहा। 1993 में वामपंथी पार्टियों ने राज्य में जबरदस्त जीत हासिल की। विधानसभा की कुल 60 सीटों में से अकेले सीपीआई (एम) ने ही 44 सीटें जीत ली थीं। दशरथ देब 1998 तक मुख्यमंत्री रहे। इसके बाद माणिक सरकार ने यह जिम्मेदारी संभाली। अगले 20 सालों तक मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बने रहे। त्रिपुरा में 25 साल से चला आ रहा लेफ्ट फ्रंट का शासन 2018 में खत्म

हो गया। तब बीजेपी ने उसे चौंकाते हुए बुरी तरह हरा दिया। बीजेपी ने 23 में भी यही कमाल दोहराया।

केरल में सफाया बना इतिहास

केरल विधानसभा चुनाव 2026 में सीपीआई (एम) के खराब प्रदर्शन के साथ ही लेफ्ट का आखिरी किला भी ढह गया है। वोटों की गिनती के मौजूदा रुझानों के मुताबिक, कांग्रेस के नेतृत्व वाले यूडीएफ ने इस दक्षिणी राज्य में अच्छी-खासी बढ़त बना ली है। केरल में पिनाराई विजयन के नेतृत्व वाली सीपीआई (एम) की लेफ्ट

डेमोक्रेटिक फ्रंट (एलडीएफ) सरकार कम्युनिस्टों का आखिरी गढ़ थी जो 4 मई को ढह गया। यह 2016 में सत्ता में आई थी। 1977 के बाद पहली बार भारत में कोई कम्युनिस्ट मुख्यमंत्री नहीं होगा।

सत्ता के शिखर से सिमटते आधार तक

1981 के दशक में वामपंथी पार्टियां अपनी सबसे मजबूत स्थिति में थीं। उनका नेतृत्व सीपीआई (एम) कर रही थी। उस समय वे केरल, त्रिपुरा और पश्चिम बंगाल में एक साथ सत्ता में थीं। लोकसभा में उनका सबसे अच्छा वक्त 2004 में आया। तब उन्होंने 60 से ज्यादा सीटें जीती थीं। मनमोहन सिंह के नेतृत्व वाली यूपीए सरकार को फ्लोर टेस्ट का सामना करना पड़ा था। ऐसा तब हुआ, जब वाम मोर्चा ने भारत-अमेरिका परमाणु समझौते के मुद्दे पर सरकार से अपना समर्थन वापस ले लिया था। उसके लोकसभा में करीब 60 सांसद थे। वामपंथी गुट पश्चिम बंगाल में 1977 से 2011 तक सत्ता में रहा। त्रिपुरा में उसने 1993 से 2018 तक शासन किया। केरल में वह हर पांच साल बाद सत्ता में वापसी करता रहा। 2021 में उसने इस क्रम को मजबूती से जारी रखते हुए एक नया इतिहास रच दिया।

केरल में तेजस्वी यादव के राष्ट्रीय जनता दल ने भी खोला खाता, दिखा दम

केरल में तेजस्वी यादव की पार्टी राष्ट्रीय जनता दल (आरजेडी) ने चौंकाने वाला प्रदर्शन किया है। सत्ता विरोधी लहर के बाद भी उनकी पार्टी के एलडीएफ गठबंधन के उम्मीदवार पी के प्रवीण बड़ी जीत की हासिल की है। वह कन्नूर जिले में आने कुथुपरांबा विधानसभा सीट से चुनाव लड़े थे। इस सीट पर कुल 16 राउंड की मतगणना आगे रहे। अंत में मार्जिन कम हुआ लेकिन पी के प्रवीण फिर भी जीत हासिल की। उनका इस सीट पर मुकाबला यूडीएफ के घटक इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग (आईयूएमएल) की उम्मीदवार जयंथी राजन से हुआ। पी के प्रवीण ने जयंती राजन को 1286 वोटों के अंतर से हराया।

राजद ने तीन सीटों पर उतारे थे कैंडिडेट

तेजस्वी यादव के नेतृत्व वाली राष्ट्रीय जनता दल ने 26 के केरल विधानसभा चुनाव में एलडीएफ गठबंधन के हिस्से के रूप में 3 सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारे थे। इन सीटों में कन्नूर की कुथूपरंबा, कोजीकोड की वडकरा और वायनाड की कलपेट्टा विधानसभा क्षेत्र शामिल हैं। आरजेडी ने वामपंथी दलों के साथ गठबंधन में यह चुनाव लड़ा। कुथूपरंबा से पीके प्रवीण, वडकरा से एमके भास्करन, और कलपेट्टा से पीके अनिल कुमार को टिकट दिया था। सत्तारूढ़ एलडीएफ की जहां राज्य में हार का सामना करना पड़ा, लेकिन तेजस्वी यादव की अगुवाई वाली आरजेडी ने दक्षिण के तटीय राज्य में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। केरल के विधानसभा चुनावों में तेजस्वी यादव प्रचार के लिए पहुंचे थे।

बंगाल में सबसे लंबा शासन

1977 में सीपीआई (एम) पश्चिम बंगाल में सत्ता में आई। इसके साथ ही, भारत के किसी भी राज्य में किसी एक पार्टी की ओर से लगातार सबसे लंबे समय तक शासन करने का सिलसिला शुरू हो गया। ज्योति बसु ने 23 साल से भी ज्यादा समय तक मुख्यमंत्री के तौर पर काम किया। इसके बाद साल 2000 में उन्होंने बुद्धदेव भट्टाचार्य को सत्ता सौंप दी। इसके बाद भी वामपंथी पार्टियों ने बंगाल में 11 साल और शासन किया।

45 साल पुराने किले ढहे

इस चुनाव में वामपंथियों के लिए सबसे दुखद खबर तिरुवनंतपुरम जैसे गढ़ों से आई, जहां 45 साल बाद लेफ्ट का किला ढहा है। भाजपा ने भी अपनी उपस्थिति मजबूत की है। हालांकि भाजपा की दाल सत्ता पाने के लिहाज से नहीं गली, लेकिन उसने कई सीटों पर त्रिकोणीय मुकाबला बनाकर एलडीएफ के पारंपरिक वोट बैंक में बड़ी सेंध लगाई। भाजपा का बढ़ता वोट शेयर सीधे तौर पर एलडीएफ के लिए नुकसानदेह साबित हुआ, जिसका सीधा फायदा यूडीएफ को मिला। पिनराई विजयन की सरकार पर भ्रष्टाचार के आरोपों और प्रशासनिक कठोरता के दावों ने सत्ता विरोधी लहर को तेज कर दिया। विजयन ने अपनी पुरानी टीम और विधायकों पर भरोसा जताया, जबकि जनता कुछ नया चाहती थी। वहीं, यूडीएफ ने एकजुट होकर और स्थानीय मुद्दों को राष्ट्रीय विमर्श से जोड़कर एक प्रभावी नैरेटिव तैयार किया। विजयन की विकास की राजनीति पर इस बार आजीविका का संकट भारी पड़ गया। LDF ने अपेक्षाकृत कम बदलाव किए और कई सीटों पर पुराने चेहरों पर ही भरोसा जताया। इसके अलावा स्थानीय मुद्दों पर कमजोर पकड़, तटीय इलाकों में बढ़ता असंतोष, गैस संकट और महंगाई जैसे मुद्दों के कारणों से LDF अपनी पकड़ बनाए रखने में नाकाम रही। केरल विधानसभा चुनाव के नतीजों ने एक बार फिर साबित कर दिया है कि ईश्वर के अपने देश की जनता सत्ता परिवर्तन के अपने पारंपरिक रिवाज को नहीं भूलती।

जिद... सच की

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

आखिर कब तक बच्चे होते रहेंगे कुत्तों के शिकार

पहले लखनऊ के मलिहाबाद उसके बाद कोई और शहर अब राजस्थान का बूंदी ये दिल को दहलाने व व्यवस्था पर सवाल उठाने वाली खबरों ने आम जने के सरकार के विश्वास को डगमगा दिया है। बता दें अलकोदिया गांव में नौ साल की रिंकू अब कभी स्कूल नहीं जाएगी। वह सुबह घर से निकली थी जिंदगी की तरफ, लेकिन लौटी मौत की खबर बनकर। यह कोई दुर्घटना नहीं, यह व्यवस्था की असफलता का क्रूर चेहरा है। कई प्रदेशों में लम्बे समय से कुत्तों के हिंसक होने और डॉग बाइट के बढ़ते मामलों की लगातार खबरों के बावजूद तंत्र सोया रहा। कुत्तों के काटे लोगों के दर्द को अनसुना किया गया। क्या सरकार किसी की मौत का इंतजार कर रही थी? क्या अब भी जिम्मेदारों के कानों पर जूं नहीं रेंगेंगी। रिंकू की मौत कोई साधारण मृत्यु नहीं, बल्कि हत्या है और आरोपी है पूरा सिस्टम। क्या सभी जिम्मेदार अफसरों के खिलाफ केस नहीं होना चाहिए। दरअसर ऐसी घटनाए देश के किसी न किसी शहर में घटती हैं। एक मजदूर की बेटी थी। जिसे उसके पिता ने पढ़ाने के लिए गांव बदला, झोपड़ी बनाई, सपने बुने।

आज वही पिता अपनी बच्ची की अर्थी उठाकर खड़ा है। उसकी आंखों में जो सवाल है-'मेरी बेटी की गलती क्या थी?' उसका जवाब किसी मंत्री, किसी अफसर के पास नहीं है। उस मां की चीखें किसी रिपोर्ट में दर्ज नहीं होंगी, लेकिन वे इस व्यवस्था को हर दिन कटघरे में खड़ा करेंगी। यह सिर्फ एक परिवार का दर्द नहीं, सिस्टम की सामूहिक विफलता है। सबसे बड़ा सवाल-जिम्मेदारी किसकी? नगर निकायों की? पंचायतों की? पशुपालन विभाग की? या फिर उस तंत्र की, जो हर घटना के बाद सिर्फ 'जांच' और 'कार्रवाई' का रटा-रटाया बयान जारी करता है? सच्चाई यह है कि जिम्मेदारी सबकी है और जवाबदेही किसी की नहीं। डॉग बाइट के मामले लगातार बढ़ रहे हैं। देश के कई जिलों में अस्पतालों की ओपीडी का बड़ा हिस्सा सिर्फ कुत्तों के काटने के मरीजों से भरा रहता है। बूंदी जैसे जिले में भी रोजाना 15-20 लोग एंटी-रेबीज इंजेक्शन लगवाने पहुंच रहे हैं। यह आंकड़ा किसी आपदा से कम नहीं है। समस्या पुरानी है, लेकिन समाधान आधे-अधूरे हैं। नसबंदी और टीकाकरण की योजनाएं फाइलों में दौड़ रही हैं, जमीन पर घिसट रही हैं। और कुत्तों के झुंड स्कूलों के बाहर, गलियों में, खेतों में खुलेआम घूम रहे हैं। बच्चे डर के साये में जी रहे हैं और सरकार केवल आंकड़े गिन रही है। विडंबना यह भी है कि जैसे ही कुत्तों के नियंत्रण की बात होती है, बहस 'श्वान-प्रेम' बनाम 'मानव सुरक्षा' में उलझ जाती है। जबकि सच्चाई यह है कि दोनों का संतुलन ही असली समाधान है। जरूरत है वैज्ञानिक तरीके से नसबंदी व टीकाकरण अभियान चलाने की। हर जिले में डॉग कंट्रोल टास्क फोर्स बनाने की। स्कूलों और ग्रामीण क्षेत्रों में सुरक्षा और जागरूकता कार्यक्रम शुरू करने की।

संजय

> कई प्रदेशों में लम्बे समय से कुत्तों के हिंसक होने और डॉग बाइट के बढ़ते मामलों की लगातार खबरों के बावजूद तंत्र सोया रहा। कुत्तों के काटे लोगों के दर्द को अनसुना किया गया। क्या सरकार किसी की मौत का इंतजार कर रही थी? क्या अब भी जिम्मेदारों के कानों पर जूं नहीं रेंगेंगी। रिंकू की मौत कोई साधारण मृत्यु नहीं, बल्कि हत्या है और आरोपी है पूरा सिस्टम।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

भाजपा को परखने के औजार बदलने होंगे

राकेश सैन

भारतीय जनता पार्टी की बंगाल जीत ने केवल राष्ट्रीय ही नहीं बल्कि अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक विश्लेषकों का भी ध्यान आकर्षित किया है। सभी अपने-अपने मापदण्डों पर इस चुनाव परिणाम को परख रहे हैं परन्तु पुराने ढर्रों पर चलते हुए फिर से गलती पर गलती दोहराते लगते हैं। यहां के विपक्ष की मानें तो यह एसआईआर के प्रयोग से निकला विजयमार्ग है तो विदेशी विश्लेषक फिर से जिंगल बैल जिंदल बैल की तरज पर साम्प्रदायिकता का गीत गाने लगे हैं। इन पांच राज्यों के चुनाव परिणाम बताते हैं कि भाजपा ने कहीं पहली बार पांव जमाए हैं, कहीं वह फिर से सत्ता में आई है तो कहीं उसने अपना जनाधार बढ़ाया है। अगर केरल जैसे राज्य में वामपंथी दलों को भाजपा के प्रभाव के डर से अयप्पा के दर्शन करने पड़ें, भाजपा के लिए राजनीतिक रूप से बंजर कहे जाने वाले बंगाल में कमल की फसल लहलाने लगे, द्रविड़ राजनीति के केंद्र तमिलनाडू में उसकी आहट सुनने लगे यह सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि विरोधी इस दल को गलत औजारों से परख रहे हैं।

विरोधी भूलते हैं कि देश का मतदाता मदिहीन नहीं है, वह सुशासन व विकास को अपनी पसंद बनाता जा रहा है। अगर कोई दल संविधान के अनुरूप काम करते हुए जनता की पसंद बन रहा है तो विरोधियों को भी अपनी सोच बदलनी होगी। भाजपा केंद्र और बहुत से राज्यों में वर्षों से शासन में है। अंधविरोध के चरम पर जा कर भी शासन व संवैधानिक व्यवस्था के किसी मान्य मापदण्ड पर विपक्ष अभी तक ऐसा कोई मुद्दा तराश नहीं पाया है जो जनता को भी मान्य हो। यहां तक कि प्रधानमंत्री कई बार चुटकी ले चुके हैं कि सार्वजनिक जीवन में विपक्ष उनकी कोई तथ्यात्मक आलोचना करने में असफल रहा है। दूसरी ओर पश्चिम बंगाल में भाजपा के सत्ता तक पहुंचते ही वैश्विक वैचारिक गलियारों में भी बेचैनी पैदा हो गई है। विदेशी मीडिया के बड़े हिस्से ने भारत में लोकतंत्र, अल्पसंख्यक अधिकार और चुनावी निष्पक्षता पर अचानक सवाल उठाने शुरू कर दिए।

बीबीसी, न्यूयॉर्क टाइम्स, द गार्जियन और अल जजीरा जैसे मंचों पर फिर से यह विमर्श तेजी से गढ़ा जाने लगा कि भारत हिन्दू राष्ट्रवाद की ऐसी दिशा में बढ़ रहा है, जहां लोकतंत्र व बहुलता खतरे में है। विदेशी मीडिया में ज्यादा चर्चा बंगाल की है। सवाल यही है कि क्या चिंता वास्तव में लोकतंत्र की है या उस सियासी बदलाव की, जिसने

दशकों पुराने वामपंथ और छद्मधर्मनिरपेक्षता के वैचारिक गढ़ को ध्वस्त कर दिया? जब भाजपा हारती है, तो विदेशी मीडिया भारत की लोकतांत्रिक परिपक्वता की तारीफ करता है, पर जैसे ही वह निर्णायक जनादेश लेकर आती है, तो लोकतांत्रिक प्रक्रिया संदेह और संस्थागत संकट की भाषा में बदल जाती है। श्रेष्ठभावना से ग्रसित पश्चिमी जगत कहीं यह तो नहीं मानता कि भारतीय मतदाताओं में राजनीतिक समझ का अभाव है ? राष्ट्रवाद को लेकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से लेकर अनेक विचारक स्पष्ट कर चुके हैं कि भारत का राष्ट्रवाद संकीर्ण पश्चिमी राष्ट्रवाद से सर्वदा विपरीत है। पश्चिमी मीडिया भारत को अक्सर यूरोपीय राजनीतिक अनुभवों के चश्मे से देखने की कोशिश करता है। वहां राष्ट्रवाद का अर्थ सत्ता विस्तार व नस्लीय वर्चस्व रहा है। जबकि भारत में राष्ट्रवाद सांस्कृतिक, सभ्यतागत पहचान और ऐतिहासिक आत्मबोध से जुड़ा है। इसे विदेशी मीडिया समझ नहीं पाता। इसीलिए वो हमारे सांस्कृतिक पुनर्जागरण को सीधे अल्पसंख्यक-बहुसंख्यकवाद से जोड़ देता है। यही कारण है कि बंगाल में भाजपा की जीत को पश्चिम के विश्लेषकों ने लोकतांत्रिक परिवर्तन के बजाय हिंदू राष्ट्रवादी कब्जे की तरह प्रस्तुत किया गया। एसआईआर पर अर्धसत्य दिखाते हुए कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने परिणामों के बाद वोट चोरी का आरोप लगाया। ममता बनर्जी ने चुनाव आयोग को भाजपा का आयोग बताया। विदेशी मीडिया ने इन आरोपों को लगभग बिना तथ्य जांचे ही अपने विमर्श का आधार बना लिया। विशेष रूप से एसआईआर को मुस्लिम मतदाताओं को हटाने की साजिश के रूप में पेश किया गया, जबकि हटाए गए 91 लाख नामों में 63 प्रतिशत हिंदू मतदाता थे। बड़ी संख्या में नाम मृत, डुप्लिकेट, स्थायी रूप से स्थानांतरित या फर्जी पाए गए थे।

इसके बावजूद विदेशी मीडिया के बड़े हिस्से ने केवल मुस्लिम वोट हटाए गए वाली जिद को प्रमुखता दी। देसी-विदेशी विश्लेषक यह भूल गए कि जिन 20 सीटों पर जाँच के बाद सबसे ज्यादा वोट काटे गए थे, उनमें से ज्यादातर पर टीएमसी ने ही कब्जा जमाया है। इन सीटों में समशेरगंज, लालगोला, भगवानगोला, रघुनाथगंज, मटियाबुर्ज, सूती, मोथाबाड़ी, गोलपोखर, मालतीपुर, चोपड़ा, सुजापुर, राजारहाट न्यू टाउन और बशीरहाट उत्तर शामिल हैं। इन सभी 13 सीटों पर ममता बनर्जी की पार्टी को जीत मिली है।

प्रोजेक्ट और पेटेंट बन गए करिअर की नींव

डॉ. मनु मिधा

आज के प्रतिस्पर्धी शैक्षणिक और व्यावसायिक परिवेश में केवल डिग्री प्राप्त करना किसी छात्र की योग्यता का पर्याप्त प्रमाण नहीं माना जाता। नियोक्ता अब ऐसे युवाओं की तलाश में हैं जो न केवल पाठ्यपुस्तकों के ज्ञान से परिचित हों, बल्कि वास्तविक जीवन की जटिल समस्याओं को सुलझाने की दृष्टि व क्षमता भी रखते हों। हाल ही में बी.टेक के कुछ प्रतिभाशाली छात्रों की एक प्रेरणादायक कहानी सामने आई, जिन्होंने अपनी पढ़ाई के साथ-साथ उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल कीं। एक अत्याधुनिक कृषि-तकनीक परियोजना और एक पेटेंटेड जूते का डिजाइन और इन्हीं उपलब्धियों ने उनके करिअर का मार्ग प्रशस्त किया। पहली उपलब्धि थी एक अनूठी कृषि-तकनीक परियोजना, जिसमें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और इंटरनेट ऑफ थिंग्स (आईओटी) को मशरूम की व्यावसायिक खेती के साथ जोड़ा गया।

मशरूम की खेती एक अत्यंत संवेदनशील प्रक्रिया है, जिसमें तापमान, आर्द्रता, प्रकाश व वायु संचरण का सटीक नियंत्रण अनिवार्य होता है। यह कार्य पूरी तरह मानवीय श्रम पर निर्भर था, जिससे न केवल उत्पादन लागत बढ़ती थी, बल्कि मानवीय चूक से फसल खराब होने का जोखिम भी रहता था। इन छात्रों ने आईओटी सेंसर्स, स्वचालित एक्चुएटर्स और एआई आधारित डेटा विश्लेषण को मिलाकर एक ऐसा स्मार्ट सिस्टम विकसित किया, जो मशरूम फार्म की पर्यावरणीय परिस्थितियों की रियल-टाइम निगरानी करता है और आवश्यकतानुसार स्वत: समायोजन करता है। इस प्रणाली की उल्लेखनीय उपलब्धि यह रही कि इसने मशरूम उत्पादन में मैन्युअल हस्तक्षेप को पचास प्रतिशत तक कम किया। यानी आधी मेहनत, आधी लागत और दोगुनी दक्षता। परियोजना ने न केवल स्थानीय किसानों की उत्पादकता में सुधार का मार्ग दिखाया, बल्कि बताया कि आधुनिक तकनीक कृषि क्षेत्र में किस प्रकार क्रांतिकारी बदलाव ला सकती है। इस प्रोजेक्ट के दौरान छात्रों ने गहन शोध किया, विशेषज्ञों से मार्गदर्शन पाया और तकनीकी बाधाओं को पार कर एक कार्यशील प्रोटोटाइप तैयार किया।

परियोजना केवल एक शैक्षणिक अभ्यास नहीं थी वरन वास्तविक समस्या का वास्तविक समाधान था, जो उद्योग की आवश्यकताओं के अनुरूप था व किसानी जीवन पर सकारात्मक प्रभाव डालने में सक्षम था। इसके समानांतर, इन छात्रों ने एक बिल्कुल भिन्न क्षेत्र में भी अपनी रचनात्मकता का परिचय दिया। उन्होंने एक विशेष जूते के तलवे का डिजाइन तैयार किया, जो एड़ी की समस्याओं जैसे प्लांटर फेसाइटिस, हील स्पर और दीर्घकालिक एड़ी दर्द से पीड़ित लोगों को अधिकतम आराम और राहत प्रदान करने के लिए तैयार किया गया है। यह महज एक फुटवियर उत्पाद नहीं, बल्कि स्वास्थ्य-केंद्रित इंजीनियरिंग समाधान है। इस डिजाइन में बायोमेकेनिकल सिद्धांतों का उपयोग करते हुए एड़ी पर पड़ने वाले दबाव को समान रूप से वितरित किया गया है, जिससे चलने-फिरने के दौरान दर्द में खासी कमी आती है। इस डिजाइन की मौलिकता और व्यावसायिक संभावनाओं को देखते हुए छात्रों ने इसके लिए पेटेंट आवेदन दाखिल किया।

पेटेंट प्राप्त करना किसी भी इंजीनियरिंग छात्र के लिए एक असाधारण उपलब्धि है, जो आधिकारिक प्रमाण है कि उनका विचार मौलिक, उपयोगी और संरक्षण के योग्य है। इस पेटेंट ने न केवल उनके बौद्धिक योगदान को मान्यता दी, बल्कि उनके रिज्यूमे को एक ऐसी विशिष्टता प्रदान की, जो किसी भी परीक्षा में अर्जित अंकों से अधिक प्रभावशाली थी। जब ये छात्र नौकरी के लिए साक्षात्कार देने पहुंचे, तो उनके रिज्यूमे ने साक्षात्कारकर्ताओं का ध्यान आकर्षित किया। सामान्यत: फ्रेशर्स से शैक्षणिक ज्ञान की ही अपेक्षा की जाती है, परंतु इन छात्रों के पास इससे कहीं अधिक था— एक सिद्ध परियोजना, जिसने कृषि क्षेत्र में पचास फीसदी श्रम कम किया, और एक पेटेंटेड आविष्कार जो लाखों लोगों के दैनिक जीवन को प्रभावित करने की क्षमता रखता था। साक्षात्कार के दौरान उन्होंने अपनी परियोजना की तकनीकी कार्यप्रणाली, विकास के दौरान आई चुनौतियों व समाधान के बारे में विस्तार से बताया। कंपनियों के प्रतिनिधियों ने महसूस किया कि ये युवा न केवल सैद्धांतिक रूप से सक्षम हैं, बल्कि व्यावहारिक समस्याओं की पहचान कर उनका समाधान ढूंढ़ने की दुर्लभ प्रतिभा भी रखते हैं।

उनकी इस बहुआयामी क्षमता— जो एआई और आईओटी जैसी अत्याधुनिक तकनीकों से लेकर उत्पाद डिजाइन और बौद्धिक संपदा तक फैली हुई थी, ने उन्हें हजारों अन्य उम्मीदवारों की भीड़ में स्पष्ट रूप से अलग और विशिष्ट बना दिया। परिणामस्वरूप, उन्हें प्रतिष्ठित कंपनियों से आकर्षक जॉब ऑफर प्राप्त हुए और उन्होंने एक उज्ज्वल करिअर की नींव रखी। निस्संदेह, यह प्रेरक उदाहरण हर उस छात्र हेतु महत्वपूर्ण संदेश है जो अपने करिअर को लेकर गंभीर हैं। खासकर सीएसई, आईटी, ईसीई, मैकेनिकल और सिविल इंजीनियरिंग के विद्यार्थी समझें कि परीक्षाओं में अच्छे अंक लाना तो आवश्यक है, किंतु यही सब कुछ नहीं है। नौकरी बाजार में वही छात्र आगे निकलते हैं जो अपनी पढ़ाई के साथ-साथ नवाचार, शोध और व्यावहारिक कार्यों में भी हाथ आजमाते हैं। एक सशक्त प्रोजेक्ट और एक पेटेंट केवल कागज की उपलब्धियां नहीं हैं — ये छात्र की चिंतन, समस्या-समाधान की क्षमता और उद्यमशीलता की भावना के जीवंत प्रमाण हैं।

चेहरे की त्वचा को खराब कर देंगी ये 5 आदतें

त्वचा की देखभाल का पहला और सबसे जरूरी काम है चेहरे की सही तरीके से सफाई। दिनभर की धूल, पसीना और प्रदूषण त्वचा पर जमा होकर उसे नुकसान पहुंचा सकते हैं। लोग ये बात जानते हैं, इसलिए वह चेहरा धोना नहीं भूलते। लेकिन ज्यादातर लोग चेहरा धोते समय ही ऐसी गलतियां कर बैठते हैं जो धीरे धीरे उनकी त्वचा को रूखा, बेजान और संवेदनशील बना देती है। इसलिए केवल चेहरा धोना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि सही तरीके से फेस वॉश करना जरूरी है। त्वचा विशेषज्ञों के अनुसार, अगर चेहरा धोने का तरीका सही न हो तो महंगे स्किन केयर प्रोडक्ट भी अपना असर नहीं दिखा पाते।

चेहरा धोने का सही तरीका

सबसे पहले हाथ साफ करें। हल्के गुनगुने पानी से चेहरा गीला करें। थोड़ी मात्रा में फेस वॉश लगाकर हल्के हाथों से मसाज करें। 20-30 सेकंड बाद पानी से धो लें। साफ तौलिये से हल्के से पोंछ लें।

सही फेस वॉश न चुनना

हर शरीर की त्वचा की जरूरत अलग होती है। इसलिए गलत फेस वॉश इस्तेमाल करने से भी स्किन की समस्या बढ़ सकती है। जैसे ऑयली स्किन के लिए जेल बेस्ड फेस वॉश सही रहता है। ड्राई स्किन के लिए क्रीम बेस्ड फेस वॉश और सेंसिटिव स्किन के लिए माइल्ड क्लेंजर का उपयोग करना चाहिए। लेकिन कुछ लोगों को लगता है कि ज्यादा फेस वॉश लगाने से चेहरा ज्यादा साफ होगा, लेकिन यह सच नहीं है। ज्यादा फेश वॉश लगाने से त्वचा ज्यादा ड्राई हो सकती है। और त्वचा का अपना नैचुरल ऑयल खत्म हो जाता है और त्वचा में जलन या रेडनेस हो सकती है। इसलिए चेहरा धोने के लिए मटर के दाने जितना फेस वॉश पर्याप्त होता है।

गंदे तौलिये से चेहरा पोंछना

चेहरा धोने के बाद कई लोग वही तौलिया इस्तेमाल करते हैं जो पूरे शरीर के लिए इस्तेमाल होता है। इसके कारण बैक्टीरिया त्वचा पर फैल सकते हैं। मुंहासे और इन्फेक्शन का खतरा बढ़ता है। फेस पर गंदा तौलिया यूज करने से चेहरा डल और ड्राय दिखने लगता है। इसकी वजह से चेहरे पर ग्लो लाने के लिए मॉइश्चराइजर और लोशन का इस्तेमाल बेअसर साबित हो सकता है। फेस वॉश के बाद चेहरे को पोछने के लिए अलग और साफ तौलिया इस्तेमाल करें। सबसे अच्छा है चेहरे का पानी सुखाने के लिए तौलिए का उपयोग करने से बचें और चेहरे की नमी बरकरार रखने के लिए गीले फेस पर लोशन अप्लाई करें।

दिन में बार-बार चेहरा धोना

कई लोग दिनभर में 5-6 बार चेहरा धोते हैं, जिससे त्वचा को नुकसान हो सकता है। ऐसा करने से त्वचा का नैचुरल ऑयल खत्म हो जाता है। स्किन ज्यादा ऑयल बनाने लगती है और मुंहासे बढ़ सकते हैं। दिन में 2 से 3 बार चेहरा धोना पर्याप्त होता है। कई लोग चेहरे की सफाई के लिए गर्म पानी का इस्तेमाल करते हैं, लेकिन यह आदत त्वचा के लिए नुकसानदेह हो सकती है। इससे त्वचा की प्राकृतिक नमी खत्म हो सकती है। गर्म पानी में मुंह धोने से स्किन ड्राई और संवेदनशील हो सकती है। साथ ही त्वचा की सुरक्षा परत कमजोर पड़ सकती है। सही तरीका है कि चेहरा धोने के लिए हमेशा हल्के गुनगुने या ठंडे पानी का इस्तेमाल करें।

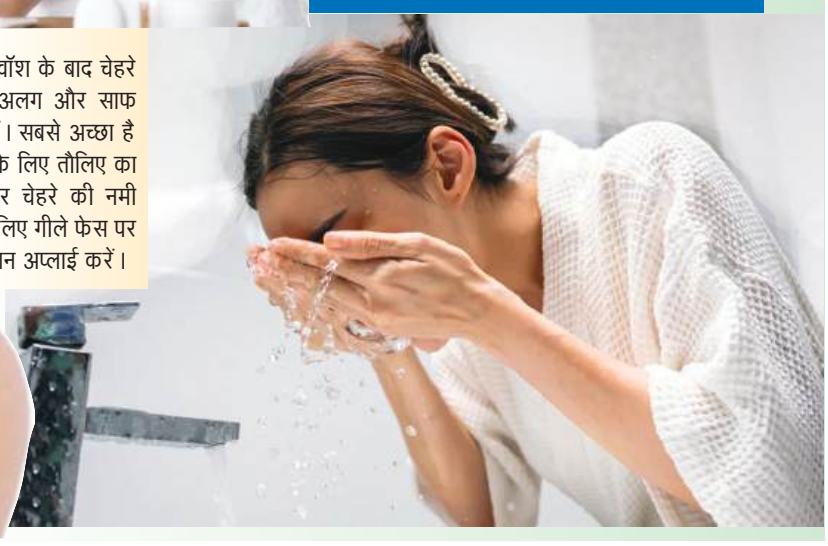

हंसना मना है

एक लड़की ने अपने बॉयफ्रेंड से पूछा, तुम्हें खुशी मिलती है जब मैं रोती हूं? उसने जवाब दिया, नहीं, मुझे उस वक्त खुशी मिलती है। जब तुम मुझे रोते हुए फोटो भेजती हो!

एक भिखारी को 100 का नोट मिला, वो फाइव स्टार होटेल में गया और भरपेट खाना खाया, 1500 रुपये का बिल आया, उसने मैनेजर से कहा, पैसे तो नहीं है, मैनेजर ने पुलिस के हवाले कर दिया, भिखारी ने पुलिस को 100 का नोट दिया, और छूट गया, इसे कहते हैं... फाइनेन्सियल मैनेजमेन्ट विदाउट एमबीए।

टीचर- एक टोकरी में 10 आम है , उसमें से 2 आम सड़ गए, बताओ कितने आम बचे? संजू- सर, 10 आम, टीचर- वो कैसे? संजू - सड़ने के बाद भी आम तो आम ही रहेगा ना, केले तो बन नहीं जायेंगे, आज संजू एक वकील है।

दो पड़ोसन आपस में बात कर रही थी, पहली पड़ोसन: तुम्हें पता है 24 साल तक मेरे कोई औलाद नहीं हुई दूसरी पड़ोसन: तो फिर तूने क्या किया? पहली पड़ोसन: जब मैं 24 साल की हुई तब घरवालों ने जाके मेरी शादी करवाई फिर कहीं जाकर मुन्ना हुआ... दूसरी पड़ोसन आईसीयू में भर्ती है।

कहानी | बुराई का अंत हर हाल में होता है

एक सांप को एक बाज आसमान पे ले कर उड़ रहा था। अचानक पंजे से सांप छूट गया और कुवें में गिर गया बाज ने बहुत कोशिश की अखिर थक हार कर चला गया। सांप ने देखा कुवें में बड़े बड़े किंग साईज़ के मेढ़क मौजूद थे। पहले तो डरा फिर एक सूखे चबूतरे पर जा बैठा और मेढ़कों के प्रधान को लगा खोजने। अखिर उसने एक मेढ़क को बुलाया और कहा मैं सांप हूं मेरा जहर तुम सब को पानी में मार देगा। ऐसा करो रोज एक मेढ़क तुम मेरे पास भेजा करो, वह मेरी सेवा करेगा और तुम सब बहुत आराम से रह सकते हो। पर याद रखना एक मेढ़क रोज आना चाहिए। एक-एक कर के सारे मेढक सांप खा गया। जब अकेले प्रधान मेढ़क बचा तब सांप चबूतरे से उतर कर पानी में आया और बोला प्रधान जी आज आप की बारी है। प्रधान मेढ़क ने कहा मेरे साथ विश्वास घात हुआ है। सांप बोला जो अपनों के साथ विश्वास घात करता है उसका यही अंजाम होता है। फिर उसने प्रधान जी को गटक लिया। कुछ देर के बाद सांप आहिस्ता आहिस्ता कुवें के ऊपर आ कर चबूतरे पर लेट गया। तभी एक बाज ने आकर सांप को दबोच लिया और बोला पहचान सांप मुझे मैं वही बाज हूं जिसके बच्चे तूने पिछले साल खा लिये थे। और जब तुझे पकड़ कर ले जा रहा था तब तू मेरे पंजे से छूट कर कुएं में जा गिरा था। तब से मैं रोज तेरी हरकत पर नजर रखता था। आज तू सारे मेढक खा कर काफी मोटा हो गया। मेरे फिर से बच्चे बड़े हो रहे हैं वह तुझे जिंदा नोच-नोच कर अपने भाई बहनों का बदला लेंगे। फिर बाज सांप को अपने घोसले की तरफ लेकर उड़ गया।

कहानी से सीख- हमें इस कहानी यह सीख मिलती है कि बुराई एक दिन हार ही जाती है वह चाहे कितनी भी ताकतवर हो!

7 अंतर खोजें

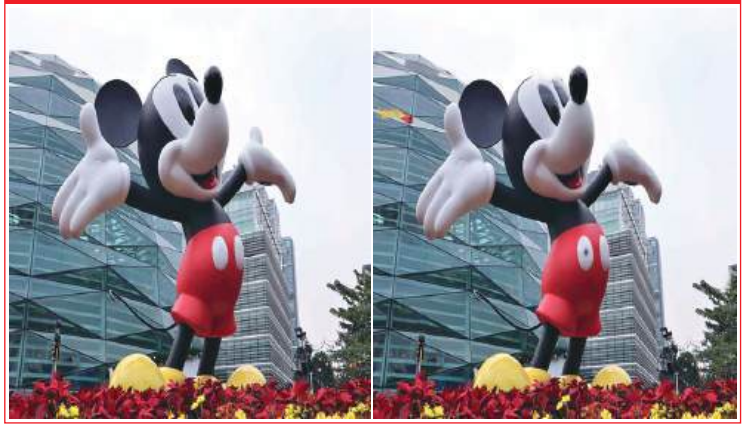

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष कोई भी महत्वपूर्ण निर्णय सोच-समझकर करें। व्यवसाय ठीक चलेगा। धार्मिक अनुष्ठान पूजा-पाठ इत्यादि का कार्यक्रम आयोजित हो सकता है। मानसिक शांति रहेगी।

वृषभ बकाया वसूली के प्रयास सफल रहेंगे। व्यावसायिक यात्रा लाभदायक रहेगी। भाग्य का साथ मिलेगा। नौकरी में चैन रहेगा। निवेश शुभ रहेगा। घर-बाहर प्रसन्नता रहेगी।

मिथुन कार्यप्रणाली में सुधार होगा। सामाजिक काम करने की इच्छा रहेगी। मान-सम्मान मिलेगा। सुख के साधन प्राप्त होंगे। नई योजना बनेगी। तत्काल लाभ नहीं मिलेगा।

कर्क व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। कारोबार में वृद्धि के योग हैं। शारीरिक कष्ट संभव है। किसी व्यक्ति से कहासुनी हो सकती है। स्वाभिमान को ठेस लग सकती है।

सिंह किसी दूसरे व्यक्ति की बातों में न आएं। कोई भी महत्वपूर्ण निर्णय सोच-समझकर करें। व्यापार अच्छा चलेगा। नौकरी में मातहतों से कहासुनी हो सकती है।

कन्या घर-बाहर प्रसन्नता रहेगी। भाइयों का सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य हो सकता है। धन प्राप्ति सुगम होगी। शरीर में कमर व घुटने आदि के दर्द से परेशानी हो सकती है।

तुला धनलाभ के अवसर हाथ आएंगे। भूमि व भवन संबंधी बाधा दूर होगी। बड़ा लाभ हो सकता है। रोजगार प्राप्ति के प्रयास सफल रहेंगे। लाभ के अवसर हाथ आएंगे।

वृश्चिक किसी वरिष्ठ व्यक्ति का मार्गदर्शन प्राप्त होगा। व्यापार से लाभ होगा। नौकरी में प्रभाव बढ़ेगा। प्रेम-प्रसंग में अनुकूलता रहेगी। कष्ट व भय सताएंगे। भाग्य का साथ मिलेगा।

धनु कीमती वस्तुएं संभालकर रखें। दुःखद समाचार प्राप्त हो सकता है। भागदौड़ अधिक रहेगी। थकान व कमजोरी महसूस होगी। आय में निश्चितता रहेगी।

मकर प्रयास सफल रहेंगे। सामाजिक कार्यों में रुचि रहेगी। मान-सम्मान मिलेगा। नौकरी में प्रशंसा होगी। कार्यसिद्धि होगी। प्रसन्नता रहेगी। चोट व रोग से बचें।

कुम्भ दूर से शुभ समाचारों की प्राप्ति होगी। घर में मेहमानों का आगमन होगा। कोई मांगलिक कार्य हो सकता है। आत्मविश्वास बढ़ेगा। जोखिम उठाने का साहस कर पाएंगे।

मीन व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। रोजगार प्राप्ति के प्रयास सफल रहेंगे। निवेश शुभ रहेगा। व्यापार मनोनुकूल लाभ देगा। किसी बड़ी समस्या से मुक्ति मिल सकती है।

दो अक्टूबर को सिनेमाघरों में धूम मचायेगी अजय देवगन की दृश्यम 3

बॉलीवुड | मसाला

अजय देवगन की फिल्म 'दृश्यम' काफी पॉपुलर फेंचाइजी है। अब फैंस को इसके तीसरे पार्ट का बेसब्री से इंतजार है। मोहनलाल की मलयालम फिल्म 'दृश्यम 3' जल्द ही रिलीज होने वाली है। लेकिन हाल ही में फिल्ममेकर अभिषेक पाठक ने खुलासा किया कि इसका हिंदी वर्जन काफी अलग होने वाला है।

अभिषेक पाठक ने हाल ही पिंकविला को दिए इंटरव्यू में खुलासा किया कि 'दृश्यम 3' की शूटिंग पूरी हो चुकी है और अब फिल्म का थोड़ा-बहुत पैचवर्क बाकी है। यह फिल्म 2 अक्टूबर को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। बातचीत के दौरान अभिषेक पाठक और कुमार मंगत पाठक ने 'दृश्यम' फ्रेंचाइजी और मोहनलाल के साथ काम करने के अनुभव और हिंदी-मलयालम वर्जन के बीच अंतर को लेकर बात की।

अभिषेक ने कहा, 'फिल्म को लेकर काफी एक्साइटमेंट है। अभी लोग मलयालम 'दृश्यम' में जो देख रहे हैं, वह अलग है। हिंदी दर्शकों के लिए मैंने एक बिल्कुल अलग ट्रैक तैयार किया है, जो यहां बहुत अच्छे से काम करेगा।'

उन्होंने आगे बताया कि मलयालम वर्जन ज्यादा फैमिली ड्रामा पर आधारित है, जबकि हिंदी वर्जन को फैमिली थ्रिलर का टच दिया गया है। अभिषेक के मुताबिक, यही इस फिल्म की खासियत होगी। उन्होंने कहा, 'जब फिल्म का ट्रेलर रिलीज होगा, तब दर्शकों को दोनों फिल्मों की दुनिया में साफ फर्क देखने को मिलेगा।'

बता दें कि हिंदी वर्जन में अजय देवगन एक बार फिर अपने चर्चित किरदार में नजर आएंगे, जबकि मलयालम वर्जन में मोहनलाल लीड रोल निभा रहे हैं।

हॉरर कॉमेडी फिल्म भूत बंगला ने 250 करोड़ का आंकड़ा किया पार

बॉलीवुड | गपशप

भूत बंगला सिनेमाघरों में लगातार अपनी पकड़ बनाए हुए है। आज फिल्म की रिलीज को पूरे 25 दिन हो चुके हैं। आज सोमवार का कलेक्शन भी सामने आ चुका है। जानिए आज फिल्म ने कितने का कलेक्शन कर लिया है। भूत बंगला ने दूसरे हफ्ते में कुल 43.75 करोड़ रुपये की कमाई की थी, जो पहले हफ्ते के मुकाबले कम रही।

प्रियदर्शन की इस फिल्म की तीसरे हफ्ते की कमाई पहले हफ्तों के मुताबिक और भी कम हो गई। इस फिल्म ने तीसरे हफ्ते में 21.85 करोड़ रुपये की कमाई की थी

भूत बंगला ने 22वें दिन चौथे शुक्रवार को 1.75 करोड़ रुपये की कमाई की थी। 23वें दिन अक्षय की इस फिल्म ने 3 करोड़ रुपये का कारोबार किया। 24वें दिन रविवार को फिल्म ने 4 करोड़ रुपये की कमाई की। वहीं आज 25वें दिन का कलेक्शन भी सामने आ चुका है। आज 25वें दिन चौथे सोमवार को भूत बंगला ने 85 लाख रुपये का कलेक्शन किया है, जो अभी बढ़ेगा। अक्षय की इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर अब तक कुल 159.60 करोड़ रुपये की कमाई कर ली है।

फिल्म भूत बंगला ने वर्ल्डवाइड में अच्छा कलेक्शन किया है। भारतीय बॉक्स ऑफिस पर जहां इसके कदम 200 करोड़ क्लब की ओर बढ़ रहे हैं, वहीं वर्ल्डवाइड में इसने 200 करोड़ का आंकड़ा आसानी से पार कर लिया है। फिल्म का वर्ल्डवाइड बॉक्स ऑफिस कलेक्शन 253.04 करोड़ रुपये तक पहुंच चुका है। इस फिल्म का बजट लगभग 120 करोड़ रुपये है, जो पहले ही पूरा हो चुका है।

भूत बंगला एक कॉमेडी हॉरर फिल्म है। इसका निर्देशन प्रियदर्शन ने किया है। इसे बालाजी मोशन पिक्चर्स और केप ऑफ गुड फिल्म्स के तहत अक्षय कुमार, एकता कपूर और शोभा कपूर ने निर्मित किया है। इस फिल्म में अक्षय कुमार, परेश रावल, जिशु सेनगुप्ता, राजपाल यादव, तब्बू और वामिका गब्बी जैसे कलाकार हैं।

बॉलीवुड | मन की बात

बिग बी ने अपने कर्मियों को दी सलाह कहा-मेरे फैंस ही मेरा परिवार हैं फैंस के साथ प्यार से पेश आओ

बिग बी के घर के बाहर हर हफ्ते बड़ी संख्या में लोग सिर्फ उनकी एक झलक पाने के लिए घंटों इंतजार करते हैं। इस रविवार भी बिग बी अपने फैंस से मिलने बाहर आए और हमेशा की तरह हाथ जोड़कर और मुस्कुराते हुए उनका स्वागत किया। बिग बी के घर के बाहर हर हफ्ते बड़ी संख्या में लोग सिर्फ उनकी एक झलक पाने के लिए घंटों इंतजार करते हैं। इस रविवार भी बिग बी अपने फैंस से मिलने बाहर आए और हमेशा की तरह हाथ जोड़कर और मुस्कुराते हुए उनका स्वागत किया। अमिताभ बच्चन ने अपने ब्लॉग पर इस मुलाकात की कई तस्वीरें शेयर कीं। उन्होंने लिखा कि फैंस का प्यार और आशीर्वाद ही उन्हें हर दिन काम करने की ताकत देता है। बिग बी ने कहा, 'ये मेरा गर्व और सम्मान है कि इतने लोग मुझे अपना प्यार देते हैं। वही मुझे और मेहनत करने के लिए प्रेरित करते हैं। मेरे फैंस ही मेरा एक्सटेंडेड परिवार हैं।' इस दौरान अमिताभ ने अपनी सिक्योरिटी टीम को भी समझाया। उन्होंने उन्हें समझाया- 'अपने , यहां जो काम करते हैं उन्हें समझाते हुए, कि चाहने वालों के साथ, उनका व्यवहार कैसा होना चाहिए। जनता के साथ जैसा उनका व्यवहार होगा, जनता समझेगी कि ये मेरा भी स्वभाव होगा।'उन्होंने आगे लिखा, 'इतनी देर, इतनी धूप में, घंटों इंतजार करना, ये कोई साधारण बात नहीं है। फिर उसके बाद उनके साथ सही व्यवहार नहीं करना, ये ठीक नहीं। जानता जनार्धन होती है। स्नेह, आदर, सद्भावना उनके प्रति- बस इतना ही तो वे देखना चाहते हैं। इतना कुछ देते हैं वो, हमें प्रेम और उनकी ओर एक आदर सम्मान का दर्पण बनना चाहिए।'

वर्क फ्रंट की बात करें तो अमिताभ बच्चन जल्द ही कल्कि 2898 एडी के सीक्वल में नजर आएंगे। फिल्म का निर्देशन नाग अश्विन कर रहे हैं। इसमें प्रभास और कमल हासन भी अहम भूमिकाओं में दिखाई देंगे।

यहां मनायी जाती है शादी से जुड़ी अनोखी परंपरा, दूल्हा-दुल्हन को देनी पड़ती अग्निपरीक्षा

रायगढ़। छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जिले के भूपदेवपुर से एक ऐसी अनोखी परंपरा सामने आई है, जिसे देखकर आप भी हैरान रह जाएंगे। जहां आज के आधुनिक दौर में शादी की रस्में बदल रही हैं, वहीं भूपदेवपुर के बिलासपुर गांव में सदियों पुरानी एक ऐसी परंपरा आज भी निभाई जा रही है, जिसमें नई नवेली दुल्हन को अपने ससुराल में प्रवेश करने से पहले जलते हुए अंगारों पर चलना पड़ता है। यहां राठिया परिवार में बहू का गृह प्रवेश किसी साधारण रस्म से नहीं बल्कि अग्नि परीक्षा से होता है। हाल ही में जयप्रकाश राठिया की शादी बाड़ादरहा गांव में संपन्न हुई और जब बारात दुल्हन को लेकर बिलासपुर गांव पहुंची, तो पूरे गांव की नजरें उस खास पल पर टिक गईं, जब दूल्हा-दुल्हन को घर के आंगन में बिछाए गए जलते अंगारों पर 7 फेरे लेने थे। परंपरा के अनुसार, बहू के आगमन से पहले परिवार उपवास रखता है, यहां तक कि पानी की एक बूंद तक ग्रहण नहीं की जाती। गांव पहुंचने पर नवविवाहित जोड़े का पारंपरिक स्वागत किया गया, नए वस्त्र और आभूषण भेंट किए गए और फिर शुरू हुई सबसे रोमांचक रस्म। दूल्हे के पिता मेहत्तर राठिया पर कथित रूप से देवता का आह्वान हुआ। उन्होंने मंडप के बीच दहकते अंगार बिछाए और खुद उनपर नृत्य किया। इसके बाद दूल्हा और दुल्हन ने हाथों में हाथ डालकर उन्हीं जलते अंगारों पर 7 फेरे लिए। हैरानी की बात यह रही कि आग की तपिश और दहकते कोयलों के बावजूद दोनों पूरी तरह सुरक्षित रहे। गांववालों के मुताबिक, यह परंपरा 100 वर्षों से भी अधिक पुरानी है और गंधेल गोत्र के परिवार आज भी इसे पूरी श्रद्धा से निभा रहे हैं। मान्यता है कि जो नवविवाहित जोड़ा इस अग्नि परीक्षा को पार कर लेता है, वो जीवन की हर कठिनाई को साथ मिलकर पार करने की शक्ति प्राप्त करता है। आस्था, परंपरा और विश्वास का यह अद्भुत संगम रायगढ़ के बिलासपुर गांव को एक अलग पहचान देता है।

अजब-गजब | सांस्कृतिक और आध्यात्मिक का केंद्र माना जाता है यह शहर

ये है दुनिया की सबसे बदबूदार जगह! बदबू सूंघने दूर दूर से आते हैं लोग, पांच मिनट खड़ा रहना है मुश्किल

प्रकृति और मानव की अनोखी कला का मिलन देखने के लिए दुनिया भर में कई जगहें मशहूर हैं, लेकिन मोरक्को के फेज शहर में स्थित चोउआरा टैनरी शायद दुनिया की सबसे बदबूदार लेकिन सबसे आकर्षक जगहों में से एक है। देखने में ये जगह रंग-बिरंगी पानी के कुंडों से भरी हुई इंद्रधनुष जैसी लगती है, मगर नाक पर इतनी तेज बदबू मारती है कि कई पर्यटक पांच मिनट भी वहां खड़े नहीं रह पाते। फिर भी हर साल हजारों-लाखों पर्यटक दूर-दूर से यहां आते हैं। फेज़ शहर मोरक्को का सांस्कृतिक और आध्यात्मिक केंद्र माना जाता है। यहां की पुरानी मेडिना यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज साइट है। चोउआरा टैनरी 11वीं सदी से लगातार काम कर रही है और इसे दुनिया की सबसे पुरानी और सबसे बड़ी कामकाजी टैनरी में से एक माना जाता है। कुछ परंपराओं के अनुसार यह 9वीं सदी से भी चली आ रही है। यहां गाय, बकरी, भेड़ और ऊंट की खालों को पारंपरिक तरीके से चमड़े में बदला जाता है।

टैनरी में चमड़ा बनाने की प्रक्रिया आज भी पूरी तरह पारंपरिक है। खालों को पहले साफ करने के लिए उन्हें चूने के घोल में भिगोया जाता है। फिर उन्हें नरम बनाने के लिए कबूतर की बीट और गाय के मूत्र में डुबोया जाता है। ये दोनों चीजें प्राकृतिक रूप से खाल को सॉफ्ट और बालों से मुक्त करती हैं, लेकिन इनसे जो बदबू निकलती है वह बेहद तेज और पैनी होती है। सड़ते हुए मांस, स्थिर पानी और इन रसायनों का मिश्रण आसपास की हवा को इतना भारी कर देता है कि सांस लेना मुश्किल हो जाता है। स्थानीय लोग पर्यटकों को प्रवेश पर ताज़ी पुदीने की पत्तियां देते हैं। इन्हें नाक के पास रखकर सूंघने से कुछ देर के लिए बदबू का असर कम हो जाता है। फिर भी गर्मियों में तो बदबू और भी तेज हो जाती है।

बदबू के बावजूद ये जगह फोटोग्राफर्स और पर्यटकों के लिए स्वर्ग है। सैकड़ों गोल-गोल पत्थर के कुंड अलग-अलग रंगों के प्राकृतिक रंगों से भरे दिखते हैं। लाल, पीला, नीला, भूरा, हरा। ये रंग सब प्राकृतिक चीजों से बनाए जाते हैं, जैसे हिना, केसर, पेड़ की छाल आदि। मजदूर कुंडों में खड़े होकर खालों को रंगते और धोते दिखते हैं। ऊपर से देखने पर पूरा नजारा बेहद खूबसूरत लगता है। यह पारंपरिक तरीका रोजगार देता है, लेकिन पर्यावरण के लिए चुनौती भी है। टैनरी से निकलने वाला कचरा और रसायन फेज़ नदी को प्रदूषित करते हैं। सरकार और पर्यावरणविद् कई बार आधुनिक तरीके अपनाने या टैनरी को दूसरे स्थान पर शिफ्ट करने की बात करते हैं, लेकिन परंपरा और पर्यटन के कारण यह अभी भी उसी जगह चल रही है।

एसआईआर को लेकर अब भी बंगाल में रार

एसआईआर प्रक्रिया से टीएमसी को हुआ नुकसान : कल्याण बनर्जी

» सुप्रीम कोर्ट में टीएमसी का दावा- भाजपा की टीएमसी पर जीत का अंतर में मतदाता सूची से हटाए गए व्यक्तियों की संख्या से कम था

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोलकाता। तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) ने दावा किया कि मतदाता सूची के विशेष गहन संशोधन (एसआईआर) में किए गए विलोपन ने पश्चिम बंगाल के कुछ विधानसभा क्षेत्रों में परिणामों को काफी हद तक प्रभावित किया है। यह दावा सुप्रीम कोर्ट में भारत के मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत और न्यायमूर्ति जॉयमलया बागची की पीठ के समक्ष सुनवाई के दौरान किया गया।

टीएमसी नेता और वरिष्ठ अधिवक्ता कल्याण बनर्जी ने बताया कि 31 निर्वाचन क्षेत्रों में भाजपा की टीएमसी पर जीत का अंतर एसआईआर निर्णय प्रक्रिया में मतदाता सूची से हटाए गए व्यक्तियों की संख्या से कम था। उन्होंने आगे कहा कि कई मामलों में हटाए गए व्यक्तियों की संख्या और हार का अंतर लगभग बराबर था। बनर्जी ने बताया कि एक निर्वाचन क्षेत्र में एक उम्मीदवार 862 वोटों से हार गया, जहां निर्णय के लिए 5432 से अधिक व्यक्तियों के नाम मतदाता सूची से हटा दिए गए थे। उन्होंने दावा किया कि टीएमसी और भाजपा के बीच वोटों का अंतर लगभग 32 लाख था और लगभग 35 लाख अपीलें अपीलीय न्यायाधिकरणों के समक्ष लंबित थीं। सांसद ने न्यायमूर्ति बागची द्वारा पहले की गई उस टिप्पणी का भी हवाला दिया कि यदि जीत का अंतर हटाए गए मतदाताओं की संख्या से कम है, तो मामले की न्यायिक जांच की आवश्यकता हो सकती है। चुनाव आयोग ने इन दलीलों का विरोध करते हुए कहा कि इसका उपाय चुनाव याचिका है और मतदान आयोग को एसआईआर से संबंधित मुद्दों और वोटों के जोड़ने या हटाने के खिलाफ परिणामी अपीलों के लिए जवाबदेह ठहराया जा सकता है।

सर्वोच्च न्यायालय ने कहा- नए आवेदन दाखिल कर सकती है टीएमसी

सर्वोच्च न्यायालय की पीठ ने कहा कि पश्चिम बंगाल की पूर्व मुख्यमंत्री ममता बनर्जी और अन्य लोग अपने दावों के संबंध में नए आवेदन दाखिल कर सकते हैं। न्यायमूर्ति बागची ने कहा, परिणामों के बारे में आप जो कुछ भी कहना चाहते हैं...जिन पर विचाराधीन निर्णयों के कारण महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा हो सकता है...उसके लिए एक स्वतंत्र अंतरिम आवेदन (आईए) की आवश्यकता है। वरिष्ठ अधिवक्ता मेनका गुरुस्वामी ने पीठ को बताया कि मौजूदा रफ्तार से अपीलीय न्यायाधिकरणों को अपीलों का निपटारा करने में कम से कम 4 साल लगेंगे। मुख्य न्यायाधीश ने कहा कि प्राथमिकता यह सुनिश्चित करना होगी कि अपीलों का निपटारा शीघ्रता से किया जाए।

देश के सामने सच्चाई रखें पीएम मोदी : केजरीवाल

» आप ने पूछा- क्या देश में आर्थिक आपातकाल है

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी (आप) के संयोजक अरविंद केजरीवाल ने सोमवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा नागरिकों को एक साल तक सोने पर खर्च न करने और खाना पकाने के तेल की खपत कम करने के सुझाव पर सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि सरकार को देश की अर्थव्यवस्था की वास्तविक स्थिति बतानी चाहिए। एक्स पर एक पोस्ट में दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री केजरीवाल ने कहा कि पीएम मोदी को जनता के सामने सच्चाई रखनी चाहिए।

उन्होंने कहा, प्रधानमंत्री ने देश के सभी नागरिकों को खाने-पीने, यात्रा और पर्यटन पर खर्च कम करने और यहां तक कि सोने और अन्य कीमती वस्तुओं की खरीद पर भी कटौती करने की सलाह दी है। क्या यह आर्थिक आपातकाल का संकेत है? क्या देश गंभीर आर्थिक संकट में डूबा हुआ है? देश में ऐसा पहले कभी नहीं हुआ। प्रधानमंत्री को देश के सामने सच्चाई रखनी चाहिए। आखिर देश की अर्थव्यवस्था की वास्तविक स्थिति क्या है? आप नेता ने सिकंदराबाद में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिए गए भाषण का जिक्र किया। अपने भाषण में पीएम मोदी ने नागरिकों से आयात पर निर्भरता कम करने, जहां तक संभव हो खाद्य तेल की खपत कम करने और स्थानीय उत्पादों का उपयोग करने का आग्रह किया ताकि अंतरराष्ट्रीय संघर्षों के कारण वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान और बढ़ती लागत के बीच अर्थव्यवस्था को मजबूत किया जा सके। उन्होंने लोगों से एक साल तक सोने की गैर-जरूरी खरीदारी से बचने और विदेश यात्राओं से दूर रहने का आग्रह किया। प्रधानमंत्री ने नागरिकों से पेट्रोल और डीजल की खपत कम करने, सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करने, कार-पूलिंग और माल ढुलाई के लिए रेल परिवहन को प्राथमिकता देने और प्राकृतिक कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देने का आग्रह किया।

भाजपा को महिलाओं ने वोट दिए, अब सुरक्षा की गारंटी दें : गौरव गोगोई

» प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष ने किया सीधा हमला

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

गुवाहाटी। असम कांग्रेस अध्यक्ष गौरव गोगोई ने असम में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सरकार से जन कल्याण को प्राथमिकता देने और राज्य में महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने का आह्वान किया है। सोमवार को बोलते हुए, गोगोई ने इस बात पर जोर दिया कि असम पुलिस को भाजपा के एजेंट के रूप में काम करने के बजाय सुरक्षा संबंधी चिंताओं पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। एएनआई को संबोधित करते हुए गोगोई ने कहा कि सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि लोकतंत्र में जनता के हित सर्वोपरि होते हैं। इस सरकार को असम की जनता की अपेक्षाओं को पूरा करना होगा। असम की महिलाओं ने भाजपा को वोट दिया है।

लेकिन असम में महिलाओं की सुरक्षा एक गंभीर मुद्दा बनी हुई है। मुझे उम्मीद है कि असम पुलिस, भाजपा के एजेंट के रूप में काम करने के बजाय, भविष्य में महिलाओं की सुरक्षा पर विशेष ध्यान देने के लिए बाध्य होगी। उनकी ये टिप्पणियां हिमंता बिस्वा सरमा के नेतृत्व वाली नई असम सरकार के शपथ ग्रहण समारोह से पहले आईं, जो 12 मई को गुवाहाटी में होने वाला है। रविवार को मुख्यमंत्री पद के लिए नामित हिमंता बिस्वा सरमा ने कहा कि शपथ ग्रहण समारोह के बाद नई सरकार का प्राथमिक लक्ष्य भाजपा के चुनाव घोषणापत्र को लागू करना होगा। पत्रकारों से बात करते हुए सरमा ने कहा कि शपथ ग्रहण करने के बाद हम पहली मंत्रिमंडल बैठक करेंगे। हमारा लक्ष्य अपने घोषणापत्र को लागू करना होगा। गठबंधन सहयोगी दलों, जिनमें भाजपा, असम गण परिषद (एजीपी) और बोडोलैंड पीपुल्स फ्रंट (बीपीएफ) के वरिष्ठ नेता शामिल थे, की बैठक में सरमा को भाजपा और एनडीए विधानसभा दलों का सर्वसम्मति से नेता चुना गया।

एमओआरडी का सिर्फ सुर्खियां बटोरने वाला कदम

» कांग्रेस सांसद जयराम रमेश ने केंद्र सरकार को घेरा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। कांग्रेस सांसद जयराम रमेश ने केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय की आलोचना करते हुए 1 जुलाई से लागू होने वाले वीबी-जी-आरएएम जी अधिनियम, 25 के कार्यान्वयन को लेकर मंत्रालय पर निशाना साधा। उन्होंने इसे एक और सुस्त और सनसनीखेज कदम बताया और आरोप लगाया कि योजना के संचालन संबंधी विवरण अभी तक उपलब्ध नहीं हैं। यह नया कानून महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (एमजीएनआरईजीए), 2005 का स्थान लेगा और ग्रामीण क्षेत्रों में 125 दिनों के मजदूरी रोजगार की गारंटी देने वाला एक उन्नत ढांचा पेश करेगा।

एक्स से बात करते हुए, संचार प्रभारी रमेश ने प्रधानमंत्री की ईंधन बचाओ अपील के एक दिन बाद सरकार ने आश्वासन दिया कि पेट्रोल या डीजल की कोई कमी नहीं है। कांग्रेस नेता ने इस बात पर जोर दिया कि योजना को लागू करने से पहले राज्य सरकारों के साथ सार्थक परामर्श किया जाना चाहिए और कहा कि चर्चाएं केवल औपचारिकता मात्र नहीं होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि राज्य सरकारों के साथ इन विवरणों पर सार्वजनिक परामर्श और चर्चाएं सार्थक तरीके से की जानी चाहिए, न कि केवल औपचारिकता पूरी करने के लिए। उन्होंने दावा किया इसमें कोई संदेह नहीं होना चाहिए।यह योजना केवल अत्यधिक केंद्रीकरण और ग्रामीण श्रमिकों की सौदेबाजी की शक्ति को कमजोर करने की गारंटी देती है।

नया अधिनियम ग्रामीण श्रमिकों के अधिकारों को कमजोर करेगा

संचार प्रभारी रमेश ने केंद्र सरकार पर तीखा हमला करते हुए आरोप लगाया कि नया अधिनियम ग्रामीण श्रमिकों के अधिकारों को कमजोर करेगा। उन्होंने कहा कि ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा आज जारी की गई बीवीरामजी योजना से पहले से ज्ञात जानकारी में कुछ भी नया नहीं जुड़ता। यह एक ऐसी सरकार का एक और आलसी प्रयास है जो सुर्खियां बटोरने में माहिर है। जल्द ही जानकारी जारी करने के अलावा कोई विवरण नहीं दिया गया है। यदि MGNREGA के इस प्रतिस्थापन को 1 जुलाई, 26 से लागू किया जाना है, तो सभी परिचालन संबंधी विवरण अब तक उपलब्ध होने चाहिए थे।

तमिलनाडु में मंदिर-स्कूलों के पास अब नहीं बिकेगी शराब

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चेन्नई। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री जोसेफ विजय ने राज्य भर में मंदिरों, स्कूलों और बस स्टैंडों के 500 मीटर के दायरे में स्थित 717 सरकारी शराब की दुकानों को बंद करने का आदेश दिया है। तमिलनाडु राज्य विपणन निगम द्वारा संचालित इन दुकानों को दो सप्ताह के भीतर बंद करना होगा। यह आदेश सुपरस्टार अभिनेता और सत्तारूढ़ तमिलगा वेट्टी कज़गम के नेता का पहला आदेश है, जिसने पिछले महीने विधानसभा चुनाव में शानदार जीत हासिल की थी।

इसमें कहा गया है कि आम जनता के कल्याण को ध्यान में रखते हुए, तमिलनाडु के मुख्यमंत्री सी. जोसेफ विजय ने आदेश जारी किया है कि पूजा स्थलों, शैक्षणिक संस्थानों और बस स्टैंडों के 500 मीटर के दायरे में स्थित 717 खुदरा शराब की दुकानें दो सप्ताह के भीतर बंद कर दी जाएं।

प्लेआफ में अभी तक नहीं पहुंची एक भी टीम

» चार हार से पंजाब की राह मुश्किल, दिल्ली से तीन विकेट से हारी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। आईपीएल 2026 का लीग चरण खत्म होने में दो सप्ताह से भी कम समय बचा है, लेकिन अब तक किसी टीम ने प्लेऑफ का टिकट पक्का नहीं किया है। यही वजह है कि इस सीजन का रोमांच अपने चरम पर पहुंच गया है। फिलहाल रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु, सनराइजर्स हैदराबाद और गुजरात टाइटंस 11 मैचों में 14-14 अंकों के साथ शीर्ष दावेदार बने हुए हैं। पंजाब किंग्स 11 मैचों में 13 अंक लेकर चौथे स्थान पर है। चेन्नई सुपर किंग्स 12 अंक के साथ पांचवें और राजस्थान रॉयल्स 12 अंकों के साथ छठे स्थान पर है।

दिल्ली कैपिटल्स और कोलकाता नाइट राइडर्स की राह मुश्किल जरूर है, लेकिन उम्मीदें अभी खत्म नहीं हुई हैं। जब से आईपीएल 10 टीमों का टूर्नामेंट बना है, तब से 16 अंक को प्लेऑफ में पहुंचने का सुरक्षित आंकड़ा माना जाता है। 10 टीमों वाले आईपीएल इतिहास में 16 अंक वाली कोई भी टीम प्लेऑफ से बाहर नहीं हुई है। 2022, 2023 और 2025 में चौथे स्थान पर रहने वाली टीम 16 अंकों के साथ प्लेऑफ में पहुंची थी। केवल 2024 में 14 अंकों पर चार टीमों के बीच नेट रनरेट का खेल हुआ था, जहां आरसीबी ने बाजी मारी थी। यानी इस सीजन भी जो टीम 16 अंक तक पहुंच जाएगी, उसकी दावेदारी लगभग तय मानी जाएगी। इन तीनों को सिर्फ एक जीत और चाहिए। बाकी तीन मैचों में से एक जीतते ही प्लेऑफ लगभग पक्का हो जाएगा। नेट रनरेट की चिंता नहीं करनी पड़ेगी। दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ पंजाब किंग्स की हार ने पॉइंट्स टेबल की तस्वीर बदल दी। पंजाब ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 210 रन बनाए, लेकिन दिल्ली ने यह लक्ष्य 19 ओवर में हासिल कर लिया। लगातार चौथी हार के बाद पंजाब किंग्स कप्तान श्रेयस अय्यर बेहद निराश नजर आए। पंजाब किंग्स के लिए मामला अभी भी उनके हाथ में है। अगर टीम अपने आखिरी तीन मैचों में से दो जीत लेती है, तो 17 अंकों के साथ प्लेऑफ लगभग तय हो जाएगा।

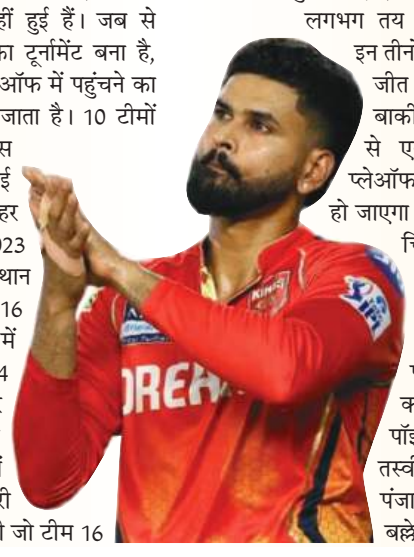

दिल्ली और केकेआर की उम्मीदें बहुत कमजोर

दिल्ली कैपिटल्स के लिए रास्ता बेहद मुश्किल है। टीम के पास 12 मैचों में 10 अंक हैं। अगर दिल्ली अपने बाकी दोनों मैच जीत भी लेती है, तब भी क्वालिफिकेशन तय नहीं होगा। सबसे बड़ी समस्या उनका खराब नेट रनरेट -0.993 है, जबकि बाकी दावेदार टीमों का नेट रनरेट पॉजिटिव है। दिल्ली को अपने बाकी दोनों मैच जीतने होंगे। साथ ही दूसरी टीमों के नतीजों का इंतजार करना होगा। इतना ही नहीं, नेट रनरेट भी बड़ा फैक्टर रहेगा। केकेआर को प्लेऑफ में पहुंचने के लिए अपने चारों मैच जीतने होंगे। ऐसा करने पर टीम 17 अंकों तक पहुंच जाएगी। अगर एक मैच रद्द हो जाए और बाकी तीन जीत जाए, तब भी 16 अंकों पर उम्मीद बच सकती है।

पीएम मोदी पर बयान से यूपी से दिल्ली तक घमासान

- » भाजपा ने सपा व कांग्रेस को घेरा
- » कांग्रेस के हरिप्रसाद ने की महिषासुर से तुलना
- » सपा सांसद ने सबसे बेकार प्रधानमंत्री बताया

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। पीएम मोदी पर बयान को लेकर यूपी से दिल्ली तक घमासान मच गया। बयान को लेकर भाजपा ने सपा व कांग्रेस पर करारा प्रहार किया। वीके हरिप्रसाद ने पीएम मोदी पर चुनाव के दौरान शासन को नजरअंदाज कर आरएसएस को सौंपने का आरोप लगाते हुए कहा कि सरकार राहुल गांधी की पश्चिम एशिया संकट पर दी गई चेतावनी पर कार्रवाई करने में विफल रही। उन्होंने दावा किया कि आरएसएस लोकतांत्रिक और संवैधानिक संस्थाओं को खत्म करने की कोशिश कर रहा है।

कांग्रेस विधायक बीके हरिप्रसाद ने सोमवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को महिषासुर कहकर संबोधित किया और भाजपा पर क्षेत्रीय दलों को कमजोर करने और अपने ही संगठन के नेताओं को दरकिनार करने का आरोप लगाया।हरिप्रसाद ने कहा कि इस महिषासुर को ही ले लीजिए, इसने अकाली दल को खत्म कर दिया, इसने शिवसेना को खत्म कर दिया, इसने जनता दल को खत्म कर दिया, इसने एआईएडीएमके को खत्म कर दिया, इसने एनसीपी को खत्म कर दिया। यह क्या बात कर रहा है? अगर इसे लगता है कि कांग्रेस ने किसी के साथ विश्वासघात किया है, तो इसकी शुरुआत सबसे पहले खुद से होती है।

पीएम ने अपने विरोधियों का सफाया कर दिया

जिस व्यक्ति ने आडवाणी का सफाया किया, उसने सभी विरोधियों का सफाया कर दिया, और संजय जोशी इसका सबसे बड़ा उदाहरण हैं। वह पकड़े गए और उन्होंने उनका पूरा राजनीतिक करियर बर्बाद कर दिया। कांग्रेस द्वारा अन्य दलों को नष्ट करने के आरोपों का बचाव करते हुए उन्होंने आगे कहा कि कांग्रेस की उदारता, लोकतंत्र में कांग्रेस का विश्वास और संविधान में कांग्रेस का विश्वास ही वह कारण है जिससे सभी क्षेत्रीय दल फले-फूले। हमने उन्हें कभी नष्ट नहीं किया। कांग्रेस ने कभी ये सब नहीं किया। कांग्रेस पारदर्शिता और सच्चे लोकतंत्र में विश्वास करती है। तेल संकट और आर्थिक नियंत्रण उपायों के संबंध में प्रधानमंत्री की हालिया टिप्पणियों की आलोचना करते हुए हरिप्रसाद ने यह भी आरोप लगाया कि पश्चिम एशिया की स्थिति के बारे में विपक्ष के नेता राहुल गांधी की चेतावनियों के बावजूद सरकार समय पर कार्रवाई करने में विफल रही।

कांग्रेस की चेतावनी का भाजपा ने गंभीरता से नहीं लिया

हरिप्रसाद ने आगे कहा कि पूरी दुनिया जानती थी कि पश्चिम एशिया में 28 फरवरी से ही संकट मंडरा रहा है, जबकि मेरे नेता और विपक्ष के नेता राहुल गांधी जी ने उस समय सरकार को इस संकट के बारे में चेतावनी दी थी। भाजपा ने उनकी बात को गंभीरता से नहीं लिया। अब, लगभग सभी को पता था कि चुनाव लगभग चार महीने से चल रहे हैं। इस मोगैम्बो ने दुनिया में व्याप्त संकट पर कभी कुछ नहीं कहा। पूरे चुनाव के दौरान, उन्होंने सिर्फ जिम्मेदारी लेने की बात की और कहा कि वे पूरे देश की जिम्मेदारी नहीं ले सकते, लेकिन उन्होंने लोगों से अपील की है कि वे सोना न खरीदें, पेट्रोलियम उत्पादों का कम इस्तेमाल करें और विदेश यात्रा न करें। उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी पर चुनाव के लिए देश भर में यात्रा करने, शासन को दरकिनार करने और आरएसएस को सौंपने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि इन चार महीनों में वो क्या कर रहे थे? पूरे देश में घूम रहे थे, झालमुरी देखने जा रहे थे, सिक्किम फुटबॉल देखने जा रहे थे, हुगली नदी पर जा रहे थे, मंदिरों में दर्शन करने जा रहे थे, और शासन कहाँ था? उन्होंने पूरा शासन और सरकार आरएसएस को सौंप दी है, और आरएसएस संविधान और लोकतांत्रिक रूप से चुनी गई सरकारों के साथ-साथ चुनाव आयोग और अदालतों जैसे संवैधानिक निकायों को भी खत्म करने पर तुला हुआ है। आरएसएस हर जगह हावी है। उन्हें आरएसएस को सलाह देनी चाहिए, और सलाह देने से पहले उन्हें खुद इसका अभ्यास करना चाहिए।

पीएम के खिलाफ बयान देकर विवादों में घिरे सपा सांसद अजेंद्र सिंह लोधी

बुंदेलखंड की हमीरपुर-महोबा-तिंदवारी संसदीय सीट से नवनिर्वाचित समाजवादी पार्टी के सांसद अजेंद्र सिंह लोधी विवादों में घिर गए हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के खिलाफ दिए गए उनके एक बयान ने प्रदेश की सियासत में उबाल ला दिया है। इस मामले में पुलिस ने सांसद के खिलाफ गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। अजेंद्र सिंह लोधी ने प्रधानमंत्री को देशविरोधी तक कह डाला। सांसद ने पीएम के खिलाफ कुछ ऐसे शब्दों का प्रयोग किया, जिसे भाजपा ने देश के सर्वोच्च पद का अपमान बताया है।

इस बयान के सामने आते ही भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं में भारी आक्रोश फैल गया, जिसके बाद शहर के आल्हा चौक पर जोरदार विरोध प्रदर्शन और पुतला दहन किया गया। वहीं, भाजपा द्वारा सांसद पर मुदकमा दर्ज कर कार्रवाई की मांग की गई थी। सोमवार को समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ता बिजली कटौती, पेयजल संकट, स्मार्ट मीटर की समस्याओं और फसल बीमा घोटाले को लेकर कलक्ट्रेट में प्रदर्शन कर रहे थे। इसी दौरान मीडिया से मुखातिब होते हुए सांसद अजेंद्र सिंह लोधी ने मर्यादा की सीमाएं लांघ दीं। उन्होंने प्रधानमंत्री पर सीधा हमला बोलते हुए उन्हें देशविरोधी बताया और कहा कि ऐसा प्रधानमंत्री न पहले कभी हुआ और न आने वाली सरकारों में होगा।ईवीएम सांसद ने केवल व्यक्तिगत टिप्पणी ही नहीं की, बल्कि सरकार की नीतियों पर भी गंभीर आरोप लगाए। उन्होंने कहा कि घरों में लगे स्मार्ट मीटर बिजली न रहने पर भी चलते रहते हैं। साथ ही, उन्होंने जिले में फसल बीमा के बड़े घोटाले और सैकड़ों विद्यालयों के बंद होने का मुद्दा उठाया। सांसद ने बंगाल की स्थिति और ईवीएम की निष्पक्षता पर भी सवाल खड़े किए और दावा किया कि 2027 में प्रदेश में सपा की सरकार बनेगी। पुतला फूंके जाने और विरोध की खबरों के बीच सपा सांसद अजेंद्र सिंह लोधी के तेवर नरम नहीं पड़े हैं। उन्होंने पलटवार करते हुए कहा कि विरोधी लोग कुछ भी कर सकते हैं, उन्हें करने दें। हम डरने वाले नहीं हैं और सच्चाई बोलते रहेंगे। अगर भाजपा वाले मुकदमा लिखवाना चाहते हैं, तो लिखवा दें, इससे ज्यादा और क्या होगा।

एआईडीएमके में फिर सियासी हलचल

- » शनमुगम के नेतृत्व वाले गुट ने विजय को दिया समर्थन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चेन्नई। तमिलनाडु की सियासत में मंगलवार को एक ऐतिहासिक मोड़ आया जब एआईडीएमके के वरिष्ठ नेता शनमुगम के नेतृत्व में कम से कम 30 विधायकों ने मुख्यमंत्री विजय की पार्टी तमिलगा वेट्री कझगम (टीवीके) को अपना समर्थन देने की घोषणा की। यह कदम ऐसे समय में आया है जब राज्य की सत्ताधारी टीवीके सरकार बुधवार को विधानसभा में अपना पहला फ्लोर टेस्ट (बहुमत परीक्षण) देने जा रही है।

समर्थन की घोषणा करते हुए शनमुगम ने पार्टी के भीतर किसी भी तरह की फूट की खबरों को खारिज कर दिया और कहा कि उनका पार्टी को तोड़ने का कोई इरादा नहीं है। यह घटनाक्रम उन खबरों के बीच सामने आया है, जिनमें कहा जा रहा था कि शनमुगम के नेतृत्व वाला विधायकों का यह गुट चाहता है कि पार्टी प्रमुख एडप्पादी पलानीस्वामी अपने पद से इस्तीफा दे दें। शनमुगम ने यह भी साफ किया किवह किसी भी गठबंधन का हिस्सा नहीं है, इसका सीधा मतलब यह था कि पार्टी का कोई संबंध नहीं है। तमिलनाडु विधानसभा में होने वाले एक अहम फ्लोर टेस्ट (बहुमत परीक्षण) से ठीक एक दिन पहले आया है। इस फ्लोर टेस्ट के दौरान मुख्यमंत्री विजय को यह साबित करना होगा कि उन्हें सदन में बहुमत का समर्थन हासिल है। चुनावों में टीवीके सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी थी और उसने 108 सीटें जीती थीं, लेकिन बहुमत के आंकड़े से वह 10 सीटें पीछे रह गई थी। ?

विजय ने कांग्रेस, वामपंथी दलों, विदुथलाई चिरुथैगल काची और इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग की मदद से सरकार बनाई थी। चेन्नई में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए, शनमुगम ने पार्टी को चुनावों में मिली हार की ओर इशारा किया। 23 अप्रैल को हुए चुनावों में पार्टी 234 विधानसभा सीटों में से सिर्फ 47 सीटें ही जीत पाई थी। 2021 के चुनावों में, डीएमके के नेतृत्व वाले गठबंधन ने एआईडीएमके को एक दशक बाद सत्ता से बेदखल कर दिया था,उस चुनाव में पार्टी को सिर्फ 75 सीटें मिली थीं। 2019 के लोकसभा चुनावों में पार्टी 39 सीटों में से सिर्फ एक सीट ही जीत पाई थी, जबकि 2024 के संसदीय चुनावों में उसका खाता भी नहीं खुल पाया। लोगों का जनादेश खास तौर पर विजय के मुख्यमंत्री बनने के लिए है। यह सबसे पहली और सबसे ज़रूरी बात है जिसे हमें समझना होगा। लोगों का जनादेश विजय के मुख्यमंत्री बनने के पक्ष में है। इसलिए, हम लोगों के जनादेश का सम्मान करते हैं। उस जनादेश का मान रखने के लिए, हम मुख्यमंत्री विजय को पूरे दिल से बधाई देते हैं।

हिमंत बिस्व सरमा ने ली सीएम पद की शपथ

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

गुवहटी। हिमंत बिस्व सरमा ने आज एक बार फिर असम की कमान संभाल ली। राज्यपाल लक्ष्मण प्रसाद आचार्य ने खानापारा क्षेत्र के वेटरनरी मैदान में 11 बजकर 40 मिनट पर हिमंत बिस्व सरमा को मुख्यमंत्री पद की शपथ दिलाई। सरमा के साथ चार अन्य विधायकों ने पद एवं गोपनीयता की शपथ ली। हिमंत का राज्य के मुख्यमंत्री के रूप में यह लगातार दूसरा कार्यकाल है।

शपथ ग्रहण समारोह में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, भाजपा अध्यक्ष नितिन नवीन, राजग शासित राज्यों के मुख्यमंत्री और उपमुख्यमंत्री तथा कई केंद्रीय मंत्री व भाजपा के राष्ट्रीय व राज्य पदाधिकारी तथा एनडीए के तमाम नेता उपस्थित थे। शपथ समारोह में कई शीर्ष उद्योगपति, सत्राधिकार (वैष्णव मठों के प्रमुख) और अन्य गणमान्य व्यक्ति, भाजपा कार्यकर्ता और बूथ समिति अध्यक्ष भी शामिल हुए। 57 वर्षीय हिमंत बिस्व सरमा असम में लगातार दूसरी बार शपथ लेने वाले पहले गैर-कांग्रेसी मुख्यमंत्री बन गए हैं। सरमा के साथ शपथ लेने वाले चार विधायकों में भाजपा के अजंता नियोग और रामेश्वर तेली, सहयोगी दल असम गण परिषद (अगप) के अतुल बोरा और बोडोलैंड पीपुल्स फ्रंट (बीपीएफ) के चरण बोरो शामिल हैं। अंजता नियोग, अतुल बोरा और चरण बोरो इससे पहले भी सरमा के पहले मंत्रिमंडल में सदस्य थे, जबकि पूर्व केंद्रीय मंत्री रामेश्वर तेली ने राज्य की राजनीति में फिर से वापसी की है। यह राज्य में एनडीए गठबंधन की तीसरी सरकार है। एनडीए पहली बार 2016 में सर्वानंद सोनोवाल के नेतृत्व में सत्ता में आया था जो अब केंद्र सरकार में मंत्री हैं।

महाराष्ट्र कार्यालय:- 2 जी, कृष्णा कुटीर सागरिका CHS जुहू तारा रोड जुहू- मुंबई- 400049। **विधि सलाहकार**: मोहम्मद हैदर
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
RNI-UPHIN/2015/62233, **दूरभाष**: 0522- 4078371 | **Email**: daily4pm@gmail.com | **website:** www.4pm.co.in |
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।

स्वामी **4 पीएम** न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक **संजय शर्मा**
द्वारा **आस्था प्रिंटर्स**, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित
पता 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। **संपादक- संजय शर्मा**